पिशाचिनी का घेरा

अनिल शेखर "अमस"

पिशाची

नी

का घेरा

डिस्क्लेमर

प्रिय पाठक पाठिकाओं,

नमस्कार,

अभी तक आप लोगों ने तंत्र के विभिन्न पहलुओं पर कथाएं पढ़ी हैं । यह कथा एक पिशाचिनी और उसके प्रपंच पर आधारित है । जैसा कि मैं अपनी सभी कथाओं में आपको स्पष्ट करता रहा हूं यह कथा भी पूर्णत: काल्पनिक कथा है । इसका किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति से कोई संबंध नहीं है । अगर ऐसा कोई भी घटनाक्रम इससे मिलता जुलता आपकी जानकारी में हो या आपने कहीं सुना हो तो वह महज एक संयोग है ।

भूत प्रेत पिशाच आदि के विषय में कई प्रकार की कथाएं प्रचलन में है और यह लगभग हर संस्कृति में और हर धर्म समाज तथा देश में कही तथा सुनी जाती है । इसलिए इनके होने या ना होने के विषय में कोई दावा नहीं कर सकता और मैं भी ऐसा कोई भी दावा नहीं कर रहा हूं ।

यह कथा मनोरंजन के लिए लिखी गई है और इसमें लिखे हुए प्रसंगों और कथानक को आप केवल एक काल्पनिक कथा के रूप में पढ़ें तथा उस का आनंद लें ।

इसमें बताए गए प्रयोग तथा उसके लिए प्रयोग की गई विधियां काल्पनिक है और उनका प्रयोग आप भूल कर भी न करें ।

शमशान को हिंदू धर्म में आत्माओं का अंतिम गंतव्य माना जाता है । इसलिए श्मशान से आने के बाद आमतौर पर हम स्नान आदि संपन्न करके ही घर में प्रवेश करते हैं । यह इसलिए किया जाता है ताकि अगर किसी प्रकार की शमशानी शक्ति हमारे साथ आ गई हो तो वह घर के बाहर छूट जाए और हमें किसी प्रकार से परेशान ना करें ।

किसी भी प्रकार की शमशान, कब्र, मजार आदि को हम मृत व्यक्तियों का स्थान मानते हैं । ऐसे स्थानों पर मृत आत्मायेँ निवास करती है । यह वे आत्माएं होती है जो किसी न किसी इच्छा की पूर्ति के लिए भटकती रहती

हैं । इसलिए आवश्यकता ना हो तो ऐसे स्थानों पर जाने से बचें । खासतौर से महिलाओं को बालिकाओं को और बच्चों को इन स्थानों पर ले जाने से बचने की कोशिश करनी चाहिए क्योंकि ऐसा माना जाता है कि उनके ऊपर मृत आत्माओं का प्रभाव बड़ी आसानी से हो जाता है । इसलिए जब भी ऐसे स्थान पर जाएं तो सावधानी बरतें । कोशिश करें कि वहां से कोई भी चीज लाकर घर में ना रखें, ताकि आपको किसी प्रकार की परेशानी ना हो ।

सनातन धर्म में देवी देवताओं को पूजने की परंपरा है । हम उसी परंपरा का पालन करें तो हमारे लिए श्रेष्ठ होगा । किसी भी प्रकार की मृत आत्माओं की शक्ति या पैशाचिक शक्तियों की सहायता लेने का प्रयास कभी ना करें, क्योंकि यह अंततः आपको मुसीबत में डाल सकता है ।

यह हमेशा ध्यान रखें कि जिस की प्रवृत्ति जैसी होगी वह वैसा ही कार्य अंत में करेगा ।
यदि आप किसी जिन्न, भूत, प्रेत, पिशाच आदि की साधना करेंगे या सिद्धि करेंगे तो यकीन मानिए कि

आपकी मृत्यु के बाद वह आपको अपनी योनि में खींचने का प्रयास अवश्य करेगा ।

जब साधक युवावस्था में रहता है तो उसकी शारीरिक तथा साधनात्मक शक्ति ज्यादा रहती है । ऐसी स्थिति में यह पैशाचीक आत्मायें उसके नियंत्रण में होती है और उसके द्वारा कराए जा रहे कार्यों को पूरा करती रहती है ।
जैसे-जैसे साधक की आयु बढ़ती जाती है.....
उसका शारीरिक बल कमजोर होता जाता है और साधना करने की क्षमता भी धीरे-धीरे कम होती जाती है.....
इस प्रकार से वह जब कमजोर हो जाता है तो यही पैशाचिक शक्तियां उसके शरीर और आत्मा दोनों पर नियंत्रण करके उसे अपने साथ अपनी योनि में भटकने के लिए ले जाती हैं ....

फिर शुरु होता है एक नारकीय और अंतहीन क्रम ..... जिसमें उस साधक की आत्मा घोर कष्ट को प्राप्त करती है ।

इसलिए सभी सुधि पाठकों से निवेदन है कि किसी भी प्रकार की मसानी साधनाओं में जिसमें भूत, प्रेत, जिन्न, पिशाच आदि को सिद्ध किया जाता है.....
कभी भी प्रवृत्त ना हो ।

यह न सिर्फ आपको मुसीबत में डालेगा बल्कि एक समय के बाद आपके परिवार के लोगों के लिए भी गंभीर समस्याएं खड़ी कर सकता है ।
ऐसा माना जाता है कि इस प्रकार की सिद्धियाँ दूसरों के नुकसान के लिए ज्यादा प्रयुक्त होती हैं और परिणाम स्वरूप आने वाली पीढ़ियों मे पैदा होने वाले बच्चों में गंभीर शारीरिक विकृतियां मानसिक विकृतियां हो सकती हैं ....
यही नहीं घोर दरिद्रता और विभिन्न प्रकार की दुर्घटनाएँ, रोग, अकाल मृत्यु जैसे प्रक्रम भी सामने आते हैं ।
प्रकृति कर्मफल निश्चित प्रदान करती है !!!
अतः आप सभी से अनुरोध है कि इस प्रकार की साधनाओं की तरफ भूलकर भी न जाए ।

इसके विपरीत अगर आप देवी साधनाएं करेंगे या देवताओं की साधना करेंगे तो वह आपको अनुकूलता

भी प्रदान करेंगे और आप के कुल को ऐश्वर्य और समृद्धि प्रदान करेंगे । जिससे आने वाले समय में आपके बच्चे और उनके बच्चे श्रेष्ठ स्थिति को प्राप्त होंगे ।

देवाधिदेव महादेव और महामाया महाकाली की कृपा से आप गृहस्थ जीवन में रहते हुए सात्विक साधनाओं को संपन्न करें और अपने जीवन को पूर्णता प्रदान करें .....

ऐसी ही शुभकामना मैं आप सभी लोगों के लिए व्यक्त करता हूं और इस कथा की ओर आपको लिए चलता हूं ।

इसे एक काल्पनिक कथा मानते हुए आप इसका आनंद लें.....

सस्नेह

अनिल शेखर "अमस"

anilshekhar.amas@gmail.com

कथानक

जिस प्रकार से देवी-देवताओं की योनियां होती है उसी प्रकार से अन्य योनिया भी इस पृथ्वी पर होती है..... ऐसा माना जाता है ।

इनमें से जो योनियों आमतौर पर लोगों के बीच प्रचलित है वह है अप्सरा यक्षिणी आदि जो सकारात्मक रूप से साधक को सहयोग करती है।

इसके अलावा कुछ योनियाँ ऐसी हैं जो साधकों के लिए कई प्रकार के कार्य संपन्न करते हैं लेकिन उनको नुकसान भी पहुंचा सकती हैं । इन्हें प्रेतनी या पिशाचिनी के नाम से जाना जाता है । इनमें जो पिशाचीनी सबसे ज्यादा लोकप्रिय कह लीजिए, या

जनसामान्य में प्रचलित कह लीजिए, वह है कर्ण पिशाचिनी .....

कर्ण पिशाचिनी एक ऐसी विद्या है जो साधक के कान में किसी का भी भूतकाल बताने में सक्षम है । यह एक घोर तामसिक विद्या है जिसे कई प्रकार से सिद्ध किया जा सकता है । इसका सबसे प्रचंड स्वरूप वाममार्गी पद्धति से किया जाता है जो कि बेहद वीभत्स और जटिल है । उसी का वर्णन मैं आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूं । इसमें वर्णित क्रियाएं और वर्णन थोड़ा वीभत्स और घृणित है इसलिए वे लोग जो अत्यंत संवेदनशील है वह इसे ना पढे ।

इसे पढ़कर या इसके अनुसार कोई भी आचरण ना करें । यह सारी विद्या गुरु गम्य विषय हैं और योग्य गुरु जो अनुभवी हो उस के सानिध्य में ही इस प्रकार की साधनाएं करनी चाहिए अन्यथा नुकसान हो सकता है । यह बिल्कुल वैसा ही है जैसे तलवार चलाना अगर आप सीखना चाहते हैं तो आपको तलवार चलाने के विशेषज्ञ व्यक्ति के साथ तलवार चलाना सीखना चाहिए ..... अन्यथा आप स्वयं को चोट पहुंचा सकते

हैं ..... और अगर गलती से तलवार गर्दन पर लग जाए तो आपकी मृत्यु भी हो सकती है । इस प्रकार की पिशाची साधना उसी श्रेणी की होती है । जहां पर अगर आपको हल्की फुल्की गलती भी हो जाए तो उसके गंभीर दुष्परिणाम आपको भोगने पड़ सकते हैं ।

कोलकाता के पास के एक गाँव मानाटोला मे रहने वाला महानंद चट्टोपाध्याय इस काल्पनिक कथा का नायक है । जो लगभग 32 साल का युवक है । अब आगे की कथा उसी के शब्दों में ।
मेरा नाम महानंद है ..... और पेशे से में ज्योतिष का कार्य करता हूं । ज्योतिष मेरा खानदानी व्यवसाय है । मेरे पिता देवानंद चट्टोपाध्याय ख्याति प्राप्त ज्योतिषी थे । मैं बचपन से ही बेहद लापरवाह और मनमौजी किस्म का प्राणी रहा । मेरे पिता ने मुझे ज्योतिष के सूत्रों को समझाने का काफी प्रयास किया , जिसमें से कुछ कुछ तो मैंने समझ लिया लेकिन बहुत ज्यादा प्रयास ना करने की वजह से ज्योतिष के गूढ सूत्र मेरी समझ में कभी नहीं आए ।

पिताजी ज्योतिष के प्रकांड विद्वान थे । उनकी गणना काफी सही रहती थी और उनके पास काफी लोग अपनी कुंडली दिखाने और भविष्य जानने के लिए आया करते थे ।

यहां यह जानना जरूरी है कि ज्योतिष वही सफल होता है जिसकी साधना निरंतर चलती रहती है । ज्योतिष में फलित अर्थात जो घटने वाला है वह बताने की क्षमता उसी व्यक्ति के पास आती है जो नित्य दिव्य शक्तियों को प्रसन्न करता रहता है और उनकी साधना में लगा रहता है । इस प्रकार से उसके अंदर की आंतरिक शक्ति विकसित होती रहती है और वह अदृश्य का साक्षात्कार करने में सक्षम हो जाता है। जो उसे कुंडली देखकर भविष्य बताने की क्षमता प्रदान करता है ।

यह कहा जाता है कि ज्योतिष गणना के आधार पर भविष्य बताता है ..... यह बात सत्य है लेकिन पूर्ण सत्य नहीं है ।

क्योंकि अगर गणना के आधार पर ज्योतिष शास्त्र भविष्य बताने में सक्षम होता .....

तो कंप्यूटर में गणना बेहद सटीक होती है और कंप्यूटर के द्वारा जो कुंडली या भविष्यफल बनता है वह 100% सही होना चाहिए था .....

लेकिन आप भी जानते हैं कि ऐसा नहीं होता है ।

भविष्य भगवती के हाथ में है !

काल की अधिष्ठात्री महाकाली के हाथ में है !

उनकी कृपा के बिना उसका दर्शन हो ही नहीं सकता .....

और जब तक वह दृश्य नहीं है.....

जब तक उसकी कृपा प्राप्त नहीं है तो ज्योतिष भविष्य के बारे में सटीक जानकारी नहीं दे सकता ।

हां ! अंदाजा जरूर लगा सकता है ।

जो घटना के घट जाने के बाद विभिन्न प्रकार से उसकी व्याख्या द्वारा प्रकट होता रहता है .....

वह एक अलग विषय है उस पर चर्चा फिर कभी ।

तो मेरे पिताजी देवानंद चट्टोपाध्याय नित्य साधना भी करते थे और महाकाल उनके आराध्य थे । अपनी काल गणना के आधार पर वह कई प्रकार की भविष्यवाणियां किया करते और उनमें से अधिकांश सही निकलती ।

हम उनके दो पुत्र थे बड़े का नाम था ज्ञानानंद और छोटा मै यानि महानंद । बड़ा भय्या ज्ञानानंद पिता के कदमों पर चलने वाला पुत्र था । आज्ञाकारी सहनशील और मृदुल स्वभाव का । उन्होने बचपन से ही उसे ज्योतिष के मूलभूत सूत्रों को समझाना प्रारंभ कर दिया था । ज्ञानानंद पूरे ध्यान से उनको सुनता समझने की कोशिश करता और अपनी तरफ से भी उसमें कुछ और जानकारियां घर में रखे हुए ग्रंथों के माध्यम से प्राप्त करने की कोशिश करता । इस प्रकार से वह अपने ज्योतिष के ज्ञान को लगातार बढ़ाता जा रहा था । इस दौरान उनकी स्कूली शिक्षा भी जारी थी क्योंकि समय के अनुसार वह भी जरूरी था ।

ज्ञानानंद पढ़ाई में भी ठीक-ठाक था और वह आसानी से मेट्रिक पास कर गया । उसके बाद आगे की पढ़ाई के लिए कोलकाता चला गया । वहां उसने ग्रेजुएशन किया और पिता के ज्योतिष के व्यवसाय को उसने अपना लिया.....

धीरे-धीरे उसका भी पिता के समान नाम होने लगा और ज्योतिषियों में उसे श्रेष्ठ माना जाने लगा । उसकी नित्य

साधना और अनुसंधान चलता रहा और इस क्षेत्र में वह सफलता प्राप्त करता गया .....
कालांतर में उसका विवाह एक सुमुखी कन्या के साथ संपन्न हो गया और वह वहीं कोलकाता में बस गया .....

मां और पिताजी कोलकाता के पास एक गांव मानाटोला में रहते थे । जैसा कि उस समय आमतौर पर होता था कि कम उम्र में विवाह हो जाता था । पिताजी की आयु उस समय लगभग 46 साल की रही होगी जब अचानक मां का देहांत हो गया । उनके जाने के बाद पिताजी अकेले हो गए । ज्ञानानंद भैया कुछ दिन तक गांव आकर रहे लेकिन फिर वापस उनको अपने कार्य क्षेत्र में जाना ही था ।
माँ के जाने के बाद पिताजी को अकेलापन सालने लगा .....
वह बीमार रहने लगे ।
यह देख कर उनकी मौसी को दुख हुआ और उन्होंने इस समस्या का हल निकालने के लिए पिताजी को दूसरा विवाह करने का सुझाव दिया । पहले तो पिताजी ने

टालमटोल की लेकिन बाद में वह विवाह के लिए तैयार हो गए ।

देवानंद चट्टोपाध्याय के तैयार हो जाने के बाद उनके लिए लड़की देखने का काम प्रारंभ हो गया । उम्र ज्यादा थी !

लेकिन आर्थिक रूप से संपन्न थे !

ज्योतिष थे !

समाज में अच्छा नाम था !

ऐसी स्थिति में बहुत सारे लोग अपनी कन्या का हाथ उनको देने के लिए सहज प्रस्तुत हो रहे थे ।

अंततः 16 वर्ष की मेघना के साथ उनका विवाह तय हो गया । मेघना सांवले रंग की भरे बदन की युवती थी ।

विवाह संपन्न हो गया .....

युवा पत्नी के साथ देवानंद का समय भी अच्छा व्यतीत होने लगा.....

समय आगे बढ़ता गया !

देवानंद संतान उत्पन्न करने के लिए बहुत ज्यादा इच्छुक नहीं थे लेकिन युवा पत्नी का आग्रह वह टाल भी नहीं पा रहे थे । काफी प्रयासों के बाद भी संतान की प्राप्ति नहीं

हो पा रही थी । मेघना गर्भवती होती थी लेकिन पांचवें छठे माह में उसका गर्भपात हो जाता था .....

कई प्रकार के ज्योतिषी उपाय किए गए !

मन्नतें मांगी गई !

अनुष्ठान संपन्न किए गए !

इन सब के परिणाम स्वरुप विवाह के पाँच वर्ष के बाद मेरा जन्म हुआ । इसके बाद मां को दुबारा गर्भ नहीं ठहरा .....

उस समय पिताजी की आयु लगभग 50 वर्ष के आसपास हो चुकी थी .....

थोड़ा बड़ा हो जाने के बाद पिताजी ने मुझे भी ज्योतिष के विषय में सिखाने का प्रयास किया .....

मेरी बहुत ज्यादा रुचि उसमें नहीं थी !

थोड़ा बहुत सीखता था !

थोड़ा मेहनत करता था और उसके बाद भाग खड़ा होता था ।

बुढ़ापे की संतान था !

युवा मां का इकलौता बच्चा !

तो उनका संरक्षण मुझे हमेशा मिलता रहता था और पिताजी मां की बात को काट नहीं पाते थे । धीरे-धीरे मैं भी बड़ा होता चला गया.....

मेरे और बड़े भाई ज्ञानानन्द के बीच में लगभग 25 वर्ष का अंतर था । इसलिए हमारे बीच कभी भी बहुत ज्यादा आत्मीयता पैदा नहीं हो पाई । उम्र का यह अंतर हमारे संबंधों के बीच में दूरियां बनाए रखता था क्योंकि वह एक वयस्क थे और मैं एक छोटा सा बच्चा ।

धीरे धीरे पिताजी की उम्र बढ़ती जा रही थी और बीमारियों ने उनको घेरना प्रारंभ कर लिया था । धीरे धीरे उन्होने ज्योतिष का काम भी बंद कर दिया । अब वे सारा समय बिस्तर पर ही रहते .....

खेत खलिहान का सारा कामकाज अब मां संभालती थी । मां ने अपने कौशल से धीरे-धीरे पिता को अपने वश में कर लिया और सारी संपत्ति अपने नाम करवा ली । दूसरे विवाह के बाद बड़े भाई ने आना जाना कम कर दिया था .....

इसलिए उनको इस विषय में ज्यादा जानकारी भी नहीं हुई और उनकी पैतृक संपत्ति को लेकर बहुत ज्यादा

रुचि भी नहीं थी क्योंकि वह पर्याप्त संपत्ति अर्जित कर चुके थे और उनकी पत्नी भी काफी धनाढ्य परिवार से थी .....

एक प्रकार से उनका गांव से संबंध लगभग नहीं के बराबर रह गया था । यह स्थिति मां के अनुकूल थी और उन्होंने धीरे-धीरे सारी संपत्ति को अपने नियंत्रण में ले लिया ।

जब लाड प्यार ज्यादा हो और साथ ही धन-संपत्ति भी पर्याप्त हो तो धीरे-धीरे कुसंगति भी प्रारंभ हो जाती है .....

मेरे साथ भी कुछ कुछ ऐसा ही हुआ ।

दोस्ती यारी बढ़ती चली गई और साथ ही अलग-अलग प्रकार के शौक भी .....

मां ने कभी मुझे इसे रोकने का प्रयास नहीं किया ! बल्कि वह सदैव मेरी इच्छाओं को पूरा करने में सभी प्रकार से मदद किया करती थी । उन्हें लगता था कि उनका लाडला राजकुमार है और उसकी हर इच्छा पूरी होनी चाहिए ।

मां ने मुझे कई बार कामकाज के विषय में ध्यान देने के लिए कहा लेकिन जब मैं उनसे लिपट कर कहता कि आप हो तो मुझे चिंता करने की क्या जरूरत है तो वह खुश हो जाती और फिर दोबारा मुझसे नहीं कहती .....
कुल मिलाकर मेरी स्थिति यह थी कि मैं पढ़ाई में फिसड्डी था !
ज्योतिष का थोड़ा सा ज्ञान था !
घर के खेती किसानी के किसी भी काम के विषय में ना तो मुझे जानकारी थी !
और ना ही मुझे दिलचस्पी थी !
सारा काम माँ देख रही थी और मैं अपनी मस्ती में डूबा हुआ था ।

जब मुफ्त में अय्याशी करने मिले तो दोस्त साथ में आने लगते हैं ।
मेरे साथ भी ऐसा ही था । दो चार चेले मेरे साथ हमेशा घूमते रहते थे । मैं अपने आप को किसी राजकुमार से कम नहीं समझता था ।
समय और परिस्थितियां किसी को भी नहीं छोडती .....

यह एक अकाट्य सत्य है !!!

मेरे साथ भी वही हुआ !

जब मैं लगभग 25 साल का हुआ तो अचानक एक दिन मेरी मां को दिल का दौरा पड़ा .....

और वह गुजर गई ।

यह मेरे ऊपर एक बहुत बड़ा आघात था । मुझे ऐसा लगा जैसे मैं पूरी दुनिया में अकेला रह गया हूं ।

कुछ समय गुजरने के बाद चमचों के साथ वापस अय्याशिया चालू हो गई ।

मैं धीरे-धीरे उनको भी भूलने लगा ।

मेरे मुनीमजी दत्ता बाबू पिताजी के समय से सारा काम देखते थे । अभी भी वही सारा कामकाज देखते थे इसलिए सब ठीक ठाक चल रहा था । मेरा खास चमचा था कादिर । कई सालों से मेरा सभी प्रकार के कामों में सहयोग करने वाला था । दत्ता बाबू के बारे में कादिर ने बाकी चमचों के साथ मिलकर उल्टा सीधा आरोप लगाना चालू कर दिया और एक ऐसी स्थिति पैदा कर दी कि मैंने उनको नौकरी से निकाल दिया । अब मेरा विश्वस्त चमचा कादिर मेरा मुनीम बन गया और यह मेरे जीवन की सबसे बड़ी गलती थी । धीरे-

धीरे उसने मेरे खेत खलिहान को अपने नाम करना चालू कर दिया । वह नशे में कई कागजातों पर दस्तखत करा लेता और मैं आँख मूंदकर उसकी बात को मान लेता था । वह मेरी भरपूर सेवा करता । मैं दिन भर नशे में रहता था इसलिए होश में आने की तो कोई बात ही नहीं थी और वह विशेष रूप से कोशिश करता कि मैं होश में ना आऊँ । क्योंकि इससे उसका उद्देश्य सधता था ।
धीरे-धीरे स्थिति आ गई कि कादिर की बात मेरी बात मानी जाने लगी .....
गांव में कादिर का कहा गया मेरा शब्द माना जाता था .....
खेत खलिहान के फैसले भी वह स्वयं लेता और सभी फैसले को स्वीकार करने लगे थे । यानी एक तरह से अब वही जमींदार बन चुका था ।
लगभग 2 साल बीतते बीतते कागजों पर उसका नाम चढ़ चुका था ।

लगातार नशे की वजह से मेरी हालत खराब होती जा रही थी और एक दिन वह आया जब वह मेरा खास

चमचा कादिर मुझे लेकर कोलकाता आया और वहां उसने मुझे नशा मुक्ति केंद्र में भर्ती करा दिया ।

लगभग 6 महीने तक में वही रहा .....

मेरा नशा अब छूट चुका था .....

वहाँ एक पंडित भी मौजूद थे उन्होंने मुझे पूजा पाठ करना भी सिखा दिया । विद्या का महत्व समझ गया था । इसलिए मैंने दिल लगाकर वह सीखा और काफी अच्छे से पूजा के मंत्रों का उच्चारण भी करने लगा था लेकिन वहां से निकलना संभव नहीं था । क्योंकि मुस्टंडे वहां से निकलने नहीं देते थे ।

एक दिन मुझे मौका मिल गया और मैं वहाँ से निकल भागा ।

मेरे पास पैसे नहीं थे ।

भूखा प्यासा मैं सड़क के किनारे बैठा हुआ था । मेरी दाढ़ी और बाल बढ़े हुए थे .....

लोग मेरे आंसू देख मुझे भिखारी समझकर सिक्के डाल रहे थे । मैं अपनी किस्मत पर रो रहा था कि कहां मैं राजकुमार की तरह जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति और आज एक ऐसी स्थिति में पडा हूं जहां लोग मुझे भिखारी समझकर भीख डाल रहे हैं ।

खैर.....

किसी तरह उन्ही भीख के पैसों की बदौलत मैं गांव पहुंच गया । गांव पहुंचने पर मैंने देखा कि मेरा चमचा कादेर मेरी गद्दी पर बैठा हुआ है और मेरे सारे नौकर चाकर उसकी सेवा में लगे हुए हैं ।

मुझे देखते ही वह पहचान गया और उसने अपने नौकरों से मेरी जमकर पिटाई करवाई और मुझे उठा कर नदी में फिकवा दिया ।

मैं नदी में बहता बहता किनारे पर जा लगा । जब भोगना लिखा होता है तो मृत्यु भी आपका साथ नहीं देती .....

मेरे साथ भी यही हो रहा था ।

जिस जगह मै किनारे पर लगा वहां एक श्मशान था । श्मशान के डोम ने मुझे देखा तो वह मुझे निकालकर बाहर ले गया और मेरे पेट से पानी निकाला । मुझे होश आने लगा । कई जगहों पर चोट लगी हुई थी लेकिन मैं जीवित था .....

डोम ने मुझसे बीती घटनाओं के बारे में पूछा और मैंने उसे सब कुछ सच-सच बता दिया और फूट फूटकर रोने

लगा । वह द्रवित हो गया । उसने मेरे लिए भोजन की व्यवस्था की और मैं उसी के साथ रहने लगा ।

वहां रहते रहते और डोम के साथ काम करते करते मुझे लगने लगा कि यह मैं क्या कर रहा हूं .....

मुझे ज्योतिष का अल्प ज्ञान तो था ही तो मैंने वही मसान घाट के पास चबूतरे पर बैठ कर कुंडलियां बाँचना चालू कर लिया ।

जैसा कि आप लोग भी जानते होंगे कि भविष्य जानने की इच्छा हर किसी को होती है, चाहे वह अमीर हो या गरीब । कोई ना कोई नित्य मुझे मिल ही जाता था और दो चार रुपये मिल जाते थे । इस प्रकार से मेरा जीवन धीरे-धीरे चल रहा था ।

लेकिन मन में कहीं न कहीं टीस उठती थी कि मैं इतने बड़े ज्योतिषी का पुत्र हूं और एक सड़क छाप ज्योतिषी बन कर रह गया हूँ । जब उन्होंने मुझे सिखाने की कोशिश की तब मैंने कुछ भी सीखना नहीं चाहा और आज यह स्थिति हो गई है कि मैं किसी लायक नहीं हूं ।

इसी ऊहापोह के साथ मेरी जिंदगी चल रही थी ।

एक दिन अचानक मेरे हाथ तंत्र विद्या की एक किताब लग गई । उसमें बहुत सारी विद्याओं के बारे में लिखा

हुआ था और उनमें से जिस विद्या ने मुझे सबसे ज्यादा आकर्षित किया वह थी कर्ण पिशाचिनी.....

यह एक ऐसी विद्या है जिसकी साधना करने से भूतकाल के विषय में जानकारी प्राप्त हो जाती है ।

यदि आप किसी ज्योतिषी के पास जाएं और वह आपकी कुंडली देखकर आपके जीवन में घटी हुई घटनाओं के विषय में सटीक जानकारी प्रदान कर दें तो यकीन मानिए कि आपका विश्वास ज्योतिषी के ऊपर बढ़ने लगेगा .....

मेरी स्थिति ऐसी थी कि मैं गणना और फलित दोनों के मामले में फिसड्डी था और ऐसे ही काम चलाऊ बात बता कर लोगों को प्रभावित करने की कोशिश करता था । जिसमें कई बार सफल हो जाता था और अधिकांश बार असफल रहता और लोग समझ जाते थे कि यह फिसड्डी ज्योतिषी है ।

जब से मैंने उस साधना के विषय में पढ़ा तो मेरी रुचि इस साधना को संपन्न करने और उसे सीखने की होने लगी .....

क्योंकि मुझे लगा कि अगर लोगों का भूतकाल मुझे पता चलने लगे तो मैं कई प्रकार से इसका उपयोग कर सकता हूं । मेरा ज्योतिष का काम भी चल निकलेगा .....

लेकिन समस्या यह थी कि उस में लिखी हुई विधि बहुत ही भयानक थी उसमें अपने ही मल मूत्र का सेवन करना था.....

इसलिए मैं थोड़ा झिझक गया था .....

समय उसी प्रकार आगे बढ़ता गया और धीरे-धीरे सब लोग समझ गए कि मुझे ज्योतिष का ज्ञान नहीं के बराबर है .....

लोगों ने मेरा मजाक उड़ाना भी प्रारंभ कर दिया । उन्होने मेरा उपनाम भी रख दिया "पोंगा पंडित".....

अब स्थिति यह हो गई कि हफ्तों में कोई एकाध आदमी गलती से मेरे पास आता था अन्यथा मेरा धंधा चौपट हो चुका था ।

डोम के साथ मेरी दोस्ती हो चुकी थी तो उसके भरोसे मेरा जीवन चल जा रहा था .... एक दिन उससे चर्चा के दौरान मैंने इस विद्या के विषय में बताया ।

मेरी बात सुनकर वह मुस्कुराया और बोला - पंडित ! तू यह साधना कर ले । कब तक मेरे साथ डोम बना रहेगा । तेरा बाप भी तो ज्योतिषी था । तेरे लिए वही काम सही है । तू मसान में ही तो रह रहा है और पिशाचिनी भी यहीं रहती है तो तेरा काम तो आसान हो जाएगा ।

उसकी बात मेरे दिल को छू गई । मुझे लगा कि यह बात तो सही कह रहा है .....

तो मैंने इस साधना को करने का मन बना लिया.....

जहां चाह होती है वहां राह निकल जाती है ! यह बात सौ फीसदी सही है ।

जब मैं अगले दिन मसान घाट के पास के चबूतरे पर बैठा था तो एक अघोरी वहां से गुजरा । उस समय भी मैं कर्ण पिशाचिनी के बारे में सोचता हुआ बैठा था । वह एक पल को मेरे पास रुका और बोला - पिशाचिनी के चक्कर में मत पड़ ! पछतायेगा ।
उसकी बात सुनकर मैं भौचक्का रह गया । मैंने सोचा इसे कैसे पता चला कि मैं क्या सोच रहा हूं ? फिर मुझे लगा कहीं यह खुद पिशाचिनी सिद्ध तो नहीं है ? यह विचार मन में आते ही मैं उठकर उसके पीछे भागा । मुझे आता देखकर वह और तेजी से भागने लगा और झाड़ियों के बीच कहीं गुम हो गया । मैं दिन भर उसे ढूंढता रहा लेकिन वह मुझे कहीं नहीं मिला । थक हार कर शाम को मैं वापस डोम की झोपड़ी में लौटा ।

अंदर घुसते ही मैं आश्चर्य मे पड गया .....

वही अघोरी डोम के साथ बैठकर शराब पी रहा था । मुझे देखकर वह चिल्लाया और बोला - साले, तू पीछा करते करते यहां तक आ गया । जा भाग जा यहां से .....

डोम ने उसे रोका और बताया कि मैं उसके साथ रहता हूँ । तब जाकर वह थोड़ा शांत हुआ ....

उसने डोम से कहा - ये हरामी पिशाचिनी साधना करना चाहता है ..... बच्चों का खेल समझता है

मा###### !

उसने गंदी गाली निकाली ...

गाली सुनते ही मेरा दिमाग खराब हो गया और मैं उसे मारने के लिए दौड़ा .....

लेकिन उस तक पहुंचने से पहले ही मुझे जोर का झटका लगा और मैं पीछे की तरफ गिर पड़ा ऐसा लगा जैसे मुझे किसी ने जोर की लात मारी हो ।

मैं अपनी छाती सहलाते हुए वापस उठ खड़ा हुआ । मेरी समझ में आ गया था कि यह अघोरी सिद्ध है और इससे मुझे इस साधना की विधि मिल सकती है ।

इसको पकड़ लेना है .....

यह विचार मेरे मन मे पक्का हो गया .....

इसी बीच बिजली की तेजी से वह झोपड़ी से बाहर निकल गया ।

मैंने डोम से पूछा - यह कौन है ?

डोम बोला - यह काला बाबा है । मेरा दोस्त है । यह दस साल पहले इसी श्मशान मे साधना करता था । तब से मेरी इससे पहचान है ।

मै बोला - क्या इसको पिशाचिनी सिद्ध है ?

डोम बोला - उससे मैंने कभी नहीं पूछा ? मुझे उसकी सिद्धियों से क्या लेना देना । अगर तू जानना चाहता है तो मैं पूछ कर बता सकता हूं ।

मेरे लिए तो यह सबसे खुशी की बात थी । क्योंकि किसी भी अनुभवी साधक के साथ साधना करना साधना मे सफलता की संभावना को बढ़ा देता है । डोम ने बाबा से बात की और पता चला कि वह इस साधना के विषय में जानता है ।

जैसे मुझे ज्ञात हुआ कि वह कर्ण पिशाचिनी साधना की विधि जानता है तो मैं उसके पीछे लग लिया । लगभग 3 महीने तक मैं उसके आगे पीछे घूमता रहा ।

वह मुझे अलग-अलग प्रकार के मंत्र बताता और उनका जाप करने के लिए बोलता । कई बार रात के दस बजे से लेकर सुबह के चार बजे तक मंत्र जाप करना होता ।

मैं उस समय परिस्थिति और घटनाओं के इतने बुरे दौर से गुजर चुका था कि मैं इस अवसर को छोड़ना नहीं चाहता था और पूरी शिद्दत से उसकी बताई हुए हर साधना को पूरा करने की कोशिश करता था ।
वह मुझे शव के मांस से लेकर मरे हुए कुत्ते के मांस तक और मनुष्य के मल से लेकर स्वयं के मल तक को खाने कहता !
स्वाभाविक रूप से मैं झिझकता था .... तब वह खुद खा कर दिखाता और फिर मुझे खाने के लिए बोलता, उसे खाता देख कर मैं भी किसी प्रकार अपने आप को तैयार कर लेता और उन अभक्ष्य पदार्थों को भी खा लेता ।
शुरु के महीने भर तक मुझे कई बार उल्टी हो जाती । कई बार इच्छा होती कि सब कुछ छोड़ कर भाग जाऊं ..... फिर पिशाचिनी का ध्यान आते ही वापस उसके पास पहुंच जाता ।

महीना भर बीतते बीतते यह सब कुछ सामान्य लगने लगा ।

किसी काम को करने में शुरुआत में झिझक लगती है और जब आप उसी काम को तीन चार बार कर ले तो फिर वह सामान्य लगने लगता है मेरे साथ भी ऐसा हो रहा था ।

अब कुछ भी खा लेना मेरे लिए एक सामान्य सी बात थी । कई बार ऐसा होता कि जब वह अघोरी मुझे नहीं कहता था लेकिन फिर भी मैं अभक्ष्य पदार्थ को उठा कर खा जाता था ..... एक प्रकार की निर्लिप्तता मेरे अंदर आती जा रही थी ।

तीन महीने तक उसने मुझे हर तरह से ठोक परखकर देखा और आखिर में वह संतुष्ट हो गया । उसके बाद उसने मुझे सात रात्री तक शमशान मे शमशान साधना का प्रारंभिक चरण सिखाया । उन सात रातों में जितने भयानक अनुभवों से मैं गुजरा उसकी बात ही बिल्कुल अलग थी ।

सातवीं रात्री उस अघोरी ने मुझसे पूछा - महानन्द । आखिरी बार सोच ले और कल बता देना ।

पहली बात तो यह कि कर्ण पिशाचिनी साधना चालू करने के बाद या तो तू सफल होगा या फिर वह तुझे मार डालेगी । यह तेरी क्षमता के ऊपर है , इसमे मै कुछ नहीं कर पाऊँगा .....

दूसरी बात .....

इतना कहकर अघोरी काला बाबा थोड़ी देर रुका और फिर बोला - तू ब्राह्मण है । लेकिन इस साधना को करने के बाद तुझे पूजा-पाठ गायत्री मंत्र सब छोड़ना होगा । क्योंकि पिशाचिनी उन स्थानों पर नहीं रह सकती जहां पर देवी देवताओं की पूजा होती है या गायत्री मंत्र का जाप होता है । इसलिए पिशाचिनी को प्राप्त करने के लिए तुझे यह सब कुछ छोड़ना पड़ेगा ।

तीसरी बात .....

कहकर काला बाबा ने सबसे बड़ा बम फोड़ा ----

बोला - कर्ण पिशाचिनी की साधना पत्नी के रूप में ही की जाती है । साधना के पश्चात वह तुझसे पत्नी का सुख चाहेगी और वह तुझे देना पड़ेगा । इसके अलावा तू किसी और स्त्री से संबंध नहीं रख सकेगा । वह तुझे ऐसा करने नहीं देगी और अगर गलती से तूने ऐसा कर

लिया तो उस स्त्री की मृत्यु अवश्यंभावी हो जाएगी । इसका मतलब जब तक पिशाचिनी तेरे साथ रहेगी तब तक तू विवाह नहीं कर पाएगा .....

आज की रात तू और सोच ले .....
कल बता देना ।
अगर तेरा निर्णय यही रहेगा तो कल मैं तुझे कर्ण पिशाचिनी साधना की पूरी विधि समझा दूंगा ।
उसके बाद तू जान तेरा काम जाने .....
मैं फिर सोच में पड़ गया । वैसे कोई विशेष पूजा पाठ तो मैं नहीं करता था लेकिन देवी-देवताओं में मेरी आस्था जरूर थी । यह बड़ा मुश्किल था कि मैं अब उनकी पूजा नहीं कर पाऊंगा । गायत्री मंत्र का उच्चारण नहीं कर पाऊंगा । किसी भी प्रकार का सात्विक कर्म संपन्न नहीं कर पाऊंगा ।

रात भर मैं विचारों के विचारों के ऊहापोह से गुजरता रहा । रात भर मुझे नींद नहीं आई .....

सुबह मेरी हालत देखकर डोम ने मुझसे पूछा - क्या हुआ ? लगता है रात भर तू नहीं सोया ।

मैं - हां ! मुझे आज फैसला करना है कि पिशाचिनी साधना करनी है या नहीं करनी है ।

डोम- तू तो यह साधना करना चाहता था ... फिर अब क्या दिक्कत है ?

मैं - पिशाचिनी साधना करने के बाद मैं किसी देवी देवता की पूजा नहीं कर पाऊंगा और ना ही गायत्री मंत्र का उच्चारण कर पाऊंगा । सब कुछ मुझे छोड़ना पड़ेगा .... यही सोच कर मैं परेशान हूं ।

डोम हंस पड़ा , बोला - तू अभी कौन सी पूजा कर रहा है, इन जलते हुए शवों के बीच मे पिशाच जैसा जीवन ही तो तू व्यतीत कर रहा है, फिर इसमें इतना सोचने की क्या बात है । ना तो कोई तेरे से कुंडली बनवाना चाहता है और ना ही कोई तेरे से पूजा करवाना चाहता है तो तू किसकी पूजा करेगा और कब करेगा । यह सब तो तेरे हाथ से वैसे ही निकल गया है ।

उसकी बात सुनकर मुझे लगा ..... यह वास्तव में बात तो सही कह रहा है । लोगों ने मुझे कुंडली दिखाना

तो बंद ही कर दिया है । आधे से ज्यादा लोग तो मेरा मजाक उड़ाते हैं । जहां तक पूजा की बात है नित्य पूजा तो मैं वैसे भी नहीं करता था और मुझसे पूजा करवाने के लिए कोई तैयार भी नहीं था । उन सारे लोगों की नजर में तो मैं एक फिसड्डी पंडित था । विवाह मैंने करना नहीं था और स्त्री सुख तो मैं बहुत भोग चुका था ..... इसलिए पिशाचिनी को स्त्री सुख देने से भी मुझे कोई ऐतराज नहीं था .....

हाँ ! मेरी इच्छा थी कि लोग मुझे ज्योतिषी के रूप में जाने .....
यकीनन पिशाचिनी इसमें मेरी मदद कर सकती थी । भले ही मैं वास्तविक ज्योतिषी नहीं बन पाता लेकिन ज्योतिषी के रूप में मेरी पहचान जरूर हो जाती । मैं लोगों के भूतकाल के विषय में पिशाचिनी के माध्यम से अवश्य बता पाता और मुझे विश्वास था कि सारे लोग इससे जरूर प्रभावित होते ।

सोच विचार करते करते मैं पिशाचिनी साधना करने के मूड में आ गया था । लगभग ग्यारह बजे के आसपास अघोरी बाबा आया ।

उसने पूछा - क्यों पंडित ! फैसला कर लिया ?

मैं बोला - हां बाबा । मैं यह साधना करूंगा ।

अघोरी काला बाबा आसमान की ओर देखकर बोला - माई ! मैंने अपनी तरफ से समझाने की कोशिश तो की ..... बाकी तेरी इच्छा .....

काला बाबा ने मुझे पूरी विधि समझा दी और साधना प्रारंभ करने का दिन भी बताया । यह साधना कृष्ण पक्ष से प्रारंभ करनी थी ।
काला बाबा ने स्पष्ट कर दिया था कि हनुमान साधना करने वाले किसी भी साधक के सामने भूलकर भी इस शक्ति का प्रदर्शन नहीं करना । क्योंकि वहां पिशाचिनी काम नहीं करती और वह तुमसे अवश्य क्रोधित होगी । इसके अलावा भूलकर भी हनुमान मंदिर में नहीं जाना है ।

मूल साधना केवल 3 दिन की थी लेकिन उसके 10 दिन पहले और 10 दिन बाद तक उससे संबंधित प्रक्रिया को करना जरूरी था । जो वाकई काफी वीभत्स थी ....

इसमें मनुष्य की हड्डियों से बनी हुई माला की आवश्यकता थी । मैं श्मशान में ही रहता था तो उसमें कोई दिक्कत की बात नहीं थी । मैंने हड्डियां इकट्ठा करना चालू कर दिया और जब 108 हड्डियां इकट्ठा हो गई तो मैंने 54-54 हड्डियों की दो माला बनाकर अपने पास रख ली । यह सबसे प्रमुख चीज थी ।

इसके अलावा केवल दीपक और तेल की आवश्यकता थी । जिसके लिए पैसे लगते हैं और वे मेरे पास नहीं थे और ना ही उसे प्राप्त करने का कोई उपाय था । मेरा ज्योतिष का धंधा भी ऐसा नहीं था कि जिससे इतनी कमाई हो जाए कि तेल और दीपक खरीद सकूं ।

अब मेरे पास डोम ही इकलौता उपाय बचा था तो मैंने उससे अपनी समस्या बताई ।

उसने अपना संदूक खोला और उसमें से कुछ रुपए निकालकर मेरे हाथ में थमा दिए । मैं समझ नहीं पा रहा था कि मैं उसका यह एहसान किस प्रकार चुकाऊंगा क्योंकि जब से मैं यहां पर आया था उससे सिर्फ ले ही रहा था और वापस कुछ भी नहीं कर पा रहा था.....

आप खुद सोचे कि मेरी स्थिति क्या रही होगी राजकुमार की तरह जीवन व्यतीत करने वाला मैं ...
जिसके आगे पीछे चमचों की फौज हुआ करती थी और सैकड़ों रुपए यूं ही भीख में दे दिया करता था.....
वह महानंद चट्टोपाध्याय .....
आज एक डोम से भीख में मिले पैसों से साधना करने जा रहा था !
खैर !
प्रकृति और समय की लीला कोई नहीं समझ सकता.....

तेल और दीपक की व्यवस्था हो गयी ।
अब मुझे एक एकांत कमरे की तलाश थी ।
जो विचित्र क्रियाएं मुझे संपन्न करनी थी वह समाज के बीच में रहकर करने से यह पक्का था कि मुझे पागल घोषित कर दिया जाता और मेरी कुटाई करके मुझे नदी में फेंक दिया जाता...
और.....
मेरी साधना करने की बात अधूरी रह जाती ।

ऐसे भी मेरी हरकतों को देखकर लोग मुझे पागल ही समझते थे .....

एकांत साधना स्थल की यह समस्या मैंने डोम से कही । उसने नदी के किनारे कुछ दूरी पर बने हुए एक पुराने पंप हाउस के विषय में बताया । वह पंप हाउस अब बंद हो चुका था और लगभग खंडहर की स्थिति में था । उस ओर कोई आता जाता नहीं था । वहाँ एक युवा प्रेमी जोड़े ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली थी । तब से उसे भुतहा माना जाता था ।

मैं डोम के साथ उस खंडहर में पहुंचा !
वह दो तल्ला था !
नीचे का हिस्सा मिट्टी और कचड़े से भरा हुआ था और जर्जर सीढ़ियां थी ....
हर तरफ सीलन और बदबू मौजूद थी ।
मुझे वहाँ पहुँचा कर डोम वापस लौट गया .....
मैं संभलकर सीढ़ियाँ चढ़ता हुआ ऊपर पहुंचा !
ऊपर का कमरा थोड़ा बेहतर स्थिति में था !
सबसे अच्छी बात यह थी कि उसमें खिड़की नहीं थी ।
कमरे का दरवाजा भी लोहे का था ...

जिस में जंग लग चुका था !
वह खुला हुआ था मैंने उसे बंद करने की कोशिश की ... लेकिन वह बंद नहीं हुआ ।
वह कई सालों से उसी प्रकार खुला पड़ा था , संभवत: इसीलिए वह अपनी जगह से नहीं हिल रहा था ।
उसका कब्जा मिट्टी और कचरे की वजह से जाम हो चुका था । मैंने एक डंडे से उसे ठोकने की कोशिश की तो बहुत सारा जंग और कचरा उसमें से नीचे गिरा ।
फिर मैंने थोड़ा जोर लगाया तो वह हल्का सा हिलने लगा .....
काफी देर के प्रयास के बाद पूरा कचरा निकल गया और फिर मैंने उसमें थोड़ा सा तेल भी डाल दिया .....
इसके बाद मैंने उसे बंद खोल करके देख लिया और संतुष्ट होकर वहां साफ सफाई करके उसे अपनी साधना के लिए तैयार कर लिया ।
यह केवल तीन दिन की साधना थी जो कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी, चतुर्दशी और अमावस्या को संपन्न करनी थी । लेकिन इसका विधान 10 दिन पहले से प्रारंभ हो जाता था और अमावस्या के 10 दिन बाद तक उसे संपन्न करना ।

अब मैंने उसी खंडहर में रहना शुरू कर दिया ...
हड्डी की बनी हुई माला को मैंने खंडहर के बाहर लगे एक पुराने मोटर के कवर में छुपा कर रख दिया था ..... क्योंकि उसकी जरूरत त्रयोदशी के दिन ही पडने वाली थी !

दो दिन के बाद.....
काला बाबा के निर्देशानुसार.....
कृष्ण पक्ष की तृतीया से मैंने यह अनुष्ठान प्रारंभ कर दिया ...
कमरे मे समान के नाम पर खाना बनाने का एक बर्तन एक थाली गिलास और राशन था ..... साथ ही एक चटाई थी जिस पर मैं सोता था और एक चादर जो आधी फटी थी वह मेरा ओढ़ना थी .....
तृतीया तिथि से मैंने नहाना और ब्रश करना बंद कर दिया । इसके अलावा जिस चटाई पर मैं सोता था उसे मोड़ कर नहीं रखता था और ना ही चादर को मोड़ता था । वह उसी प्रकार से पड़ी रहती जिस प्रकार सोकर उठने पर होती और वापस रात में उसी में सो जाता था ।

खाना बनाने का बर्तन और खाना खाने का एक थाली , दोनों खाना बनाने के बाद और खाना खा लेने के बाद वैसे ही छोड़ देता था । उसे न तो साफ करता और न ही धोता !

झूठे बर्तन में अगले दिन का खाना बनाता और उसी झूठे बर्तन में खाना खाता .....

जब यह सब करता तो मुझे अपने घर की बहुत याद आती .....

जहां मेरी मां चमचमाती हुई चाँदी की थाली में खाना खिलाती थी ....

बगल में एक नौकरानी खड़ी होकर पंखा चलती थी ।

वह सब अतीत की बातें थी ... मगर परेशान तो करती थीं ।

अब मेरी स्थिति यह थी कि मैं पिशाचीनी साधना करने के लिए जूठे बर्तन मे भोजन पका रहा था और जूठे बर्तन में भोजन खा रहा था ।

उसी प्रकार बिना नहाए धोए मैं अपनी ज्योतिष कार्य के लिए भी बैठता .....

लोग आश्चर्य करते कि यह कैसा पंडित है जो बिना नहाए धोए बैठा हुआ है ....
लेकिन विधि के अनुसार अपना नित्य का कार्य करते रहना जरूरी था इसलिए मैं वैसा करता था ।

मेरी इन हरकतों से लोगों के बीच में संशय पैदा होने लगा । वही दुकान लगाने वाले दो लड़के चंदर और गुल्लू सबसे ज्यादा मेरी बुराई करते थे और मेरी हंसी उड़ाया करते थे .....
उनमें से एक ने प्लान बनाया की रात को देखा जाए कि मैं क्या करता हूं ?
साधना प्रक्रिया चालू नहीं हुई थी और वह अष्टमी का दिन था .....
कृष्ण पक्ष की अष्टमी से अमावस्या तक उग्र शक्तियों का जागरण होता रहता है । मैं उसी प्रकार जाकर शाम को उस भूत बंगले में प्रवेश कर गया और भोजन बनाने लगा । दोनों लड़के एक लालटेन लेकर पंप हाउस के पास पहुंचे और जैसे ही उन्होंने अंदर कदम रखा .....
सामने दो लाशें लटकती हुई दिखाई दे रही थी.....
जिनकी आँखें खुली हुई थीं .....

उसे देखते ही दोनों के होश उड गए । दोनों की पेंट गीली हो गयी और सारी बहादुरी हवा हो गयी ।
लालटेन छोड़कर दोनों वहां से भाग निकले .....
लालटेन गिरने की आवाज सुनकर मैं नीचे उतरा तो वहां लालटेन पड़ी हुई थी और किसी के भागने की आवाज आ रही थी .....
मुझे पता नहीं चल पाया कि कौन था ?
डर तो लगा लेकिन फिर जाकर दरवाजा अंदर से बंद करके सो गया । रात भर फिर कोई आवाज नहीं आई ।

अगले दिन जब मैं वापस अपने काम पर गया तो परिस्थितियां कुछ बदली हुई सी दिखाई दे रही थी । दोनों लड़के जो रोज मेरा मजाक उड़ाते थे मुझे देखते ही डर के एक कोने में दुबक गए । धीरे-धीरे उन दोनों ने सारी कहानी लोगों को बताना चालू कर दिया की पंप हाउस मे उन्होंने दो लटकती हुई लाशों को देखा । यह सुनकर पहले तो लोगों ने विश्वास नहीं किया ... लेकिन दोनों के ज्यादा जोर देने पर आठ दस लोग मेरे पास आए और मुझे अपने साथ लेकर उस पंप हाउस की ओर चल पड़े ।

पंप हाउस के अंदर जैसा कि होना था वहां कुछ भी नहीं था ....

हां उन लड़कों की लालटेन जरूर वहां पड़ी हुई थी । उन लोगों ने मुझे अपना कमरा खोल कर दिखाने के लिए कहा मैंने कमरा खोल कर दिखा दिया । वहां कुछ भी ऐसा नहीं था जो शक करने के लायक था । यह देख कर सारे लोग संतुष्ट हो गए और उन्होंने मुझसे माफी भी मांगी .....

सबने मिलकर उन दोनों लड़कों की जमकर धुलाई कर डाली .....

रात को हुई इस घटना के बाद से उन लड़कों ने मेरा पीछा करना बंद कर दिया.....

साथ ही लोगों के बीच में भी यह हल्का सा डर बैठा कि संभवत यह कोई ऐसी साधना कर रहा है जहां जाने से खतरा है.....

हमारे यहां डराने की बड़ी लंबी परंपरा है । जिस आदमी ने जिंदगी में कभी साधना नहीं की हो उसे आप गलती से बता दें कि मैं आजकल मंत्र जाप कर रहा हूं तो वह यह जरूर बताएगा कि मंत्र का उच्चारण सही होना चाहिए वरना उसके बहुत ज्यादा नुकसान होते हैं ।

मजे की बात यह है कि उस व्यक्ति ने अपने जीवन में कभी मंत्र जाप नहीं किया लेकिन वह ज्ञान बघारने से बिल्कुल नहीं चूकेगा .....

तो उस घटना से उसी प्रकार का डरावना माहौल वहाँ लोगों के बीच बन गया था .....
जितने लोग उतनी बातें .....
वैसे इस प्रकार का माहौल बनना मेरे लिए अच्छा था क्योंकि अब कोई भी उस पंप हाउस की ओर नहीं आता था और मैं आसानी से अपनी साधना पूर्ण कर सकता था ।
इसी प्रकार मेरा दिन आगे बढ़ता गया ....
मैं स्नान नहीं करता था और ना ही ब्रश करता था .....
लेकिन ज्योतिष का कार्य करने के लिए वहां जाकर बैठता जरूर था ....
यह और बात थी कि पहले भी मेरे पास कोई नहीं आता था और अब मेरी अवस्था देखकर लोग मुझे भिखारी समझते थे और कभी कभार कोई कुछ पैसे भी डाल जाता ।

इस प्रकार से 10 दिन गुजर जाए और अब लोगों को मेरे उस प्रकार से बैठने पर कोई आपत्ति नहीं थी .....
उनको लगने लगा कि यह पगला है और इससे बोलने का कुछ मतलब नहीं है .....

इसी प्रकार चलते चलते ..... त्रयोदशी की तिथि आ चुकी थी और उसी दिन से मुझे साधना प्रारंभ करनी थी ।
यह तीन दिन अर्थात त्रयोदशी, चतुर्दशी और अमावस्या साधना के प्रमुख दिन थे । इन तीन दिनों में मुझे भोजन और पानी के स्थान पर स्वयं के मल मूत्र का सेवन करना था । यह बेहद जटिल और कठिन कार्य था । लेकिन अघोरी बाबा के साथ जो तीन महीने मैंने गुजारे थे उसमें कई प्रकार के अभक्ष्य पदार्थों को खा लेने की वजह से अब मुझे इसमें कोई दिक्कत नहीं होनी थी । इन तीन दिनों तक उस कमरे से बाहर भी नहीं निकलना था ।
मल मूत्र का विसर्जन भी उसी कक्ष में करना था.....

त्रयोदशी के दिन दोपहर मे भूख लगने पर मैंने अपना ही मल ग्रहण कर लिया !

अब आप स्वयं सोचे कि जिस मल को धोने के बाद हम अपने हाथ साबुन से धो लेते हैं .... उसके बावजूद उस हाथ से कोई भी कार्य जो पवित्र हो वह हम नहीं करते हैं । यहां तक कि अगर आप किसी को बाएं हाथ से चाय दे दे तो वह उसे अपना अपमान सोच सकता है इसलिए सामान्यतः किसी भी मेहमान को भी दाहिने हाथ से ही चाय का प्याला पकड़ा जाता है ....

उसी गंदे बदबूदार मल को भोजन के स्थान पर ग्रहण करना.....

आप स्वयं सोचने की इतनी कठिन और जटिल स्थिति होगी .....

मैं एक ऐसे मार्ग पर चल चुका था जहां से वापसी का कोई रास्ता नहीं था.....

बीच में रुकने का कोई प्रावधान नहीं था !

मुझे आगे बढ़ना था .....

मैंने मोटर के कवर में से माला निकालकर अपने कक्ष में रख ली थी ।

रात्री का समय हो गया .....

हड्डियों की एक माला मैंने अपने गले में धारण कर ली थी दूसरी माला जाप के लिए रखी हुई थी । जैसा कि मैंने आपको बताया था दोनों मालाओं में 54-54 हड्डियों के मनके थे ।

रात लगभग नौ बजे के आसपास मेरा मंत्र जाप प्रारंभ हुआ ..... मुझे रात भर में 54 माला मंत्र जाप करना था और किसी भी परिस्थिति में मुझे तीनों दिन इस प्रकार से 54-54 माला जाप पूरा करना था । अगर किसी भी दिन यह चौवन माला जाप पूर्ण नहीं हो पाता तो पिशाचिनी मुझे समाप्त कर सकती थी ।

काला बाबा ने जो विधि मुझे बताई थी वह वाममार्गी विधि थी और इस विधि से सबसे जल्दी कर्ण पिशाचिनी की सिद्धि प्राप्त होती है । लेकिन इस विधि में इतनी सारी जटिलताएं थी कि इसे सामान्य आदमी पूर्ण नहीं कर सकता था । इसे कोई अघोरी ही संपन्न कर सकता था.....

सबसे पहले कर्ण पिशाचिनी का ध्यान संपन्न किया उनका ध्यान इस प्रकार है :-

चितासनस्थां नरमुंडमाला विभूषितामस्थिमणीन्
कराब्जैः।
प्रेतान्नरांत्रैर्दधतीं कुवस्त्रां भजामहे कर्णपिशाचिनी
ताम्॥

यह उनका स्वरूप है.....
जिसका ध्यान किया जाता है ।
इस स्वरूप में जो वर्णन है उसका आशय यह है कि पिशाचिनी चिता के आसन पर विराजमान है अर्थात शव जल रहा है और उस चिता के ऊपर वह पिशाचिनी विराजमान है । जिसके गले में नर मुंडो की माला पड़ी हुई है और हाथों में हड्डियों की माला मौजूद है जिसे मनुष्य के आंतों से गूँथकर तयार किया गया है । उनकी वेशभूषा कुवस्त्र है अर्थात गंदे वस्त्र धारण करती है.....
ऐसी कर्ण पिशाचिनी को मैं प्रणाम करता हूं ।

अब आप सोचे कि जिस का स्वरूप ऐसा होगा वह वास्तव में दिखने में कैसी होगी और उसी भयानक पिशाचिनी की साधना मुझे संपन्न करनी थी .....

ध्यान करते करते ही मुझे भय की अनुभूति होने लगी थी !

किसी प्रकार से ध्यान संपन्न करने के बाद मैंने जाप करना प्रारंभ कर दिया.....

नदी का किनारा था....

झींगुर की आवाज तो स्वाभाविक रूप से आनी ही थी.....

सन्नाटे को चीरती हुई वह आवाज हृदय में भय पैदा करने के लिए पर्याप्त थी .....

अचानक कहीं दूर कुत्ते के रोने की आवाज भी आती थी .....

इसके अलावा अजीब अजीब सी आवाज तो आती ही रहती थी.....

दस दिन वहाँ रहने के कारण मैं अब इस सब का आदि हो चुका था .....

रात को लगभग एक बजे का समय रहा होगा जब मुझे जोर से पेशाब करने की इच्छा हुई ..... बाबा के बताए नियमानुसार आसन से नहीं उठना था और ऐसी कोई भी स्थिति आने पर आसन पर बैठे बैठे उसे संपन्न करना था .....

मैंने आसन पर बैठे बैठे ही मूत्र त्याग किया !

मेरा मंत्र जाप जारी था .....

उस रात्रि कई बार मल मूत्र का त्याग हुआ और वही उसी आसन पर उसे मुझे करना पड़ा । इतना ही पर्याप्त नहीं था उसे अपने शरीर पर भी लगाना था । यह सब करते हुए मुझे वास्तव में एक पिशाच जैसी अनुभूति हो रही थी ....

अपने निर्णय पर कहीं ना कहीं पछतावा भी हो रहा था कि यह मैं क्या कर रहा हूं.....

लेकिन अब कुछ नहीं हो सकता था अब या तो मुझे साधना पूर्ण करनी थी.....

या अपनी जान से हाथ धोना था ।

जैसा कि आप लोग जानते हैं अपनी जान सबको प्यारी होती है और मुझे भी प्यारी थी .....

इसलिए मैं ना चाहते हुए भी वह सब करने के लिए बाध्य था .....

और कर रहा था .....

इसी प्रकार ऊहापोह और विचित्र अवस्था में मंत्र जाप चलता रहा और कमरे के अंदर अजीब अजीब सी आवाजें आती रही.....

ऐसा लग रहा था जैसे कोई कमरे में मौजूद है !

वह दिखाई तो नहीं दे रहा था लेकिन यह स्पष्ट पता चल रहा था कि कमरे के अंदर कोई न कोई मौजूद है !

यह भाव आते ही मन में भय का संचरण भी होता था लेकिन डर से कांपते हुए भी मैंने मंत्र जाप करना नहीं छोड़ा .....

कमरे मे अजीब अजीब सी आकृतियाँ दिखने लगी थीं .....

फिर एक अजीब सी स्त्री कमरे में दिखाई देने लगी । जिसकी ऊंचाई लगभग 8 फुट के आसपास रही होगी । उसका शरीर ऐसा लग रहा था जैसे कंकाल के ऊपर चमड़ी लपेट दी गई हो ..... उसका रंग बिल्कुल वैसा ही काला था जैसे जले हुए शव का होता है .....

उसके हाथ-पांव बांस के पतले डंडों की तरह लग रहे थे और उसका चेहरा काफी बड़ा सा था । उसके बाल कमर तक बिखरे हुए थे और नुकीले दांत बाहर की तरफ निकले हुए थे । वह काफी देर तक मुझे क्रोधित होकर देखती रही और उसके बाद उसने अपने बाएं हाथ से मेरे बाल पकड़कर खींचा और गाल पर एक जोर का तमाचा जड़ दिया । मुझे ऐसा लगा कि मेरे दो चार दाँत अपनी जगह से हिल गए ..... इतनी ज़ोर का तमाचा था .....

मामला इतने पर खत्म नहीं हुआ । हर 10-15 मिनट में वह कभी तमाचा मारती । कभी बाल पकड़कर खींचती तो कभी मेरे ऊपर लातों की बौछार कर देती .....

यही नहीं अपने लंबे लंबे नाखूनों से उसने मेरे सारे शरीर को नोच डाला !

शरीर का कोई हिस्सा ऐसा नहीं था जिस पर के नाखून के निशान मौजूद नहीं थे हर जगह दर्द हो रहा था .....

रात भर यही चलता रहा किसी प्रकार से मेरा मंत्र जाप सुबह 5:30 बजे तक पूरा हो गया .....

तब तक मैं बुरी तरह थक चुका था .....

उसके बाद मैं वही उसी आसन पर थकान की वजह से लुढ़क गया और मुझे नींद लग गई ।

दोपहर लगभग बारह बजे के आसपास मेरी नींद खुली .....
कमरे की स्थिति देखकर वितृष्णा से मन भर गया । हर तरफ मल मूत्र बिखरा हुआ था और उसके सामने वह हड्डी की माला पड़ी हुई थी जिससे मैं मंत्र जाप कर रहा था ....
दूसरी हड्डी की माला मैंने गले में धारण की हुई थी ।

मैं किसी प्रेत या किसी पिशाच की तरह उस गंदे बदबूदार कमरे मे पड़ा हुआ था !
कमरा दुर्गंध से भरा था !
काफी देर तक में बर्दाश्त करता रहा !
फिर मुझे उबकाई सी आने लगी .....
मुझे बड़े जोरों की प्यास लग रही थी.....
पुनः स्वमूत्र से ही अपनी प्यास बुझा कर मैं फिर से लेट गया ।
थोड़ी देर बाद मुझे ऐसा लगा जैसे कमरे में कोई आया हो .....

मैंने आंख खोल कर देखा तो एक महिला खड़ी हुई थी ।

जो पूरी तरह से निर्वस्त्र थी.....

उसे देखने से उसकी आयु लगभग 20-22 वर्ष की लग रही थी । उसकी ऊंचाई 5 फुट के आसपास रही होगी । उसके बाल रूखे रूखे से झाड़ू जैसे थे और दांत बाहर की ओर निकले हुए थे ।

आंखें बड़ी बड़ी सी थी .....

देखने से मन में भय का संचार होता था । उसके स्तन बड़े बड़े थे और कमर के नीचे का हिस्सा भी काफी विस्तृत था .....

उसका रंग सांवले से भी गहरे काले रंग का था !

वह किसी धुंध के जैसे दिख रही थी .....

मैं उसे देख पा रहा था लेकिन वह पूरी तरह स्पष्ट नहीं थी ।

कुछ देर तक वह उसी प्रकार से खड़ी रही.....

फिर धीरे-धीरे मेरे पास आने लगी !

जैसे जैसे वह मेरे पास आती जा रही थी उसकी आकृति ठोस होती जा रही थी ।

चलते चलते वह मेरे करीब आ गई अब वह पूरी तरह से स्पष्ट देहधारी की तरह दिखने लगी थी ।

उसने मेरा एक चक्कर लगाया.....
जैसे करीब से देखने की कोशिश कर रही हो !
फिर वह मेरे पाँव के पास जाकर खड़ी हो गई.....
फिर उसने दूसरा चक्कर लगाया .....
और इस बार वह मेरे सर के पास जाकर खड़ी हो गई ।
ऐसा लग रहा था जैसे वह सभी तरफ से मेरा निरीक्षण कर रही हो .....
उसकी आकृति को देखने से मन में भय की उत्पत्ति होती थी ..... लेकिन मैं शांत अवस्था में उसी प्रकार लेटा हुआ था ।
थोड़ा समय और गुजरा होगा और तभी वह आगे बढ़ कर मेरी बगल में आकर लेट गई । मैंने खिसकने की कोशिश की और अपने स्थान से एक फुट खिसककर लेट गया .....
वह भी मेरी तरफ खिसकी .....
इस बार उसने अपना पांव मेरे ऊपर रख दिया और मेरे कंधे पर अपना सर रख लिया !

उसके हाथ मेरे सीने पर रखे हुए थे !

मैंने फिर से खिसकने की कोशिश की .....

लेकिन इस बार उसने मेरी कमर के नीचे से अपना बाया हाथ डाल दिया और मुझे जकड़ लिया ।

उसकी पकड़ इतनी मजबूत थी कि मैं अपने स्थान से हिल भी नहीं पाया और उसी प्रकार पड़ा रहा ..... मैं किसी अनजानी आशंका से भयभीत हो रहा था कि पता नहीं अब क्या होगा ?

सीने पर रखा हुआ उसका हाथ धीरे-धीरे नीचे की ओर से बढ़ने लगा.....

आगे बढ़ कर उसने मेरे अंग को पकड़ लिया । काफी देर तक वह इसी प्रकार से खेलती रही और फिर मुझ पर सवार हो गई .....

डर के मारे मेरी हालत खराब थी और वह बड़े आराम से मेरे ऊपर लेटी हुई थी .....

वह पूरी बेशर्मी से मेरे गाल और होठों को चूम रही थी .....

यह स्थिति कुछ 10-15 मिनट तक रही होगी .....

उसके बाद उसने पुनः मेरे अंगों को पकड़ लिया.....

आधे घंटे तक वह खिलवाड़ करती रही.....

लेकिन आगे की क्रिया संपन्न नहीं हुई ।
मैंने उठने की कोशिश की लेकिन उसने मुझे उठने नहीं दिया ।
मैंने इधर उधर खिसकने की कोशिश की तो उसने मुझे कस कर पकड़ लिया और अलग हटने नही दिया ।
जब मैंने उसे हटाने की कोशिश की तो उसके चेहरे से क्रोध भरी हुंकार निकली और उसकी बड़ी-बड़ी आंखें लाल हो गई । जिसे देखकर मैं भयभीत हो गया .....
उसने मुझे ऐसी दृष्टि से देखा कि मेरा बचा खुचा साहस भी भंग हो गया और मैं अवश अवस्था में वैसे ही लेटा रहा .....
वह अपनी मस्ती करती रही इधर उधर हाथ फेरती रही और उसके बाद वहां से लुप्त हो गई .....

चतुर्दशी की रात्रि को फिर से मेरी साधना प्रारंभ हुई ।
दिन की घटनाओं के बाद मैं काफी विचलित था लेकिन जैसा कि मैंने बताया था साधना प्रारंभ करने के बाद उसे बीच में छोड़ना असंभव था । इसलिए मैंने मंत्र जाप प्रारंभ कर दिया ।
कमरा दुर्गंध से भरा हुआ था.....

मेरा मंत्र जाप जारी था !

लगभग दो ढाई घंटे का मंत्र जाप हुआ होगा जब कमरे का वातावरण एक अजीब सी खुशबू से भर गया !

खुशबू बेहद मादक थी ....

फिर कदमों की आहट आने लगी !

ऐसा लगने लगा जैसे कमरे में कोई है !

लेकिन.....

अभी कोई दिखाई नहीं दे रहा था !

खुशबू तेज होती जा रही थी !

पूरा कमरा खुशबू से महक रहा था !!

ऐसा लग नहीं रहा था कि यह वही कमरा है जिसमें मल मूत्र की बदबू आ रही थी .....

अर्धरात्रि के आसपास कमरे में एक सुंदर स्त्री प्रकट हुई .....

उसकी उम्र लगभग 30 वर्ष के आसपास की लग रही थी !

वह पूरी तरह निर्वस्त्र थी ! उसके गले मे हड्डियों की माला पड़ी हुई थी ।

वह थोड़ी मांसल देह की स्वामिनी थी !

स्तन काफी बड़े-बड़े और लटके हुए थे !

चेहरा बेहद सुंदर दिखाई दे रहा था !

वह आकर मेरे बगल में बैठ गई....

उसकी जांघ मेरी जांघ से टकरा रही थी ।

एहसास होता था कि वह ऐसा जानबूझकर कर रही थी !

मेरी हालत खराब होती जा रही थी !

उस अवस्था में भी मुझे उत्तेजना होने लगी थी !!

तभी वह उठकर मेरी गोद में आकर बैठ गई और अपना दाहिना हाथ उसने मेरी गर्दन में लपेट दिया और मेरे गाल को चूमने लगी ।

ऐसी स्थिति में मंत्र जाप करना कितना कठिन होगा यह आप स्वयं महसूस कर सकते हैं ।

लेकिन मृत्यु का भय सभी प्रकार के आकर्षण को तोड़ देता है ....

कुछ वैसा ही मेरे साथ हो रहा था ।

मैं जाप कर रहा था लेकिन अटक अटक कर !

मेरे शरीर में तनाव आ रहा था !

तभी अचानक वहीं बैठे बैठे उसने मूत्र त्याग कर दिया !

यह एक अप्रत्याशित घटना थी .....

मेरा शरीर शिथिल होने लगा ।

वह उसी प्रकार मेरी गोद में बैठी रही और हर पंद्रह बीस मिनट के बाद मूत्र त्याग करती रही । लगभग एक डेढ़ घंटे के बाद उसने वही बैठे-बैठे मलत्याग भी कर दिया । जिसे उठाकर कुछ वह अपने ऊपर लेप लेती और कुछ मेरे ऊपर लगा देती .....

उसका लिपटने चिपटने का क्रम वैसा ही चलता रहा....

हाँ मेरा मन वितृष्णा से भर चुका था .....

रात भर इसी प्रकार की प्रक्रिया चलती रही ।

लगभग तीन बजे के आसपास वह लुप्त हो गई ।

उस दिन मेरा मंत्र जाप इन सब क्रियाओं की वजह से थोड़ा देर तक चला और सुबह 6:30 बजे मेरा मंत्र जप पूर्ण हुआ .....

जाप पूरा होते ही मैं पुनः जमीन पर लेट गया ....

अचानक मुझे उस पंप हाउस मे अत्महत्या करने वालों का विचार आया ..... मैं सोचने लगा कि उन दोनों ने अत्महत्या क्यों की होगी ? यही सोचते सोचते मेरी नींद लग गयी .....

कुछ देर के बाद मुझे अपने कानों में सरसराहट सी महसूस होने लगी । ऐसा लग रहा था जैसे कोई फुसफुसा रहा हो.....

मेरी नींद खुल गई .....

फुसफुसाहट जैसी आवाज मुझे अब भी महसूस हो रही थी .....

मैंने उस आवाज को ध्यान से सुनने की कोशिश की । वह एक महिला की आवाज थी ..... जो काफी तीखी और स्पष्ट थी .....

वह कह रही थी - उन दोनों ने आत्महत्या नहीं की थी ?

मैंने सोचा - लेकिन लोग तो वही कहते हैं ।

फिर खिलखिलाहट की आवाज गूंजी और फिर से वही आवाज आई - लोगों के कहने से कुछ नहीं होता । सच्चाई कुछ और है ।

मैंने फिर मानसिक प्रश्न किया - तो सच्चाई बताओ ।

वह बोली - नदी के उस पार एक गांव है उसका नाम है मांझी टोला । आज से 30 साल पहले वहां एक मछुआरा बटुक दास रहता था । जिसकी पत्नी का नाम था शेफाली । बटुक दास को शादी के 5 साल बाद तक

संतान नहीं हुई तो मन्नतों और पूजा-पाठ का दौर चलने लगा ....

बाबाओं के चक्कर भी काटना प्रारंभ हो गया । गांव में जो भी बाबा आता उसकी सेवा सत्कार बटुक अवश्य करता । इसी प्रकार समय आगे बढ़ता जा रहा था और उसके विवाह को 7 साल हो चुके थे । बटुक दास के घर में एक कापालिक भी आया करता था .....

कापालिक का नाम था मुरुंडनाथ !

कापालिक मुरुंडनाथ एक सिद्ध कापालिक था । एक दिन उसने विशेष तांत्रिक अनुष्ठान के द्वारा बटुक को संतान प्राप्ति का आश्वासन दिया लेकिन उसके लिए एक शर्त रखी । वह शर्त यह थी कि वह अपनी दूसरी कन्या को उसकी भैरवी बनाएगा ।

निसंतान बटुक दास तो इस बात के लिए राजी हो गया लेकिन पत्नी की सहमति के बिना यह संभव नही था । शेफाली शुरु में झिझकी फिर उसे लगा कि निसंतान मरने से अच्छा है कि एक संतान को देकर संतानवती होने का सौभाग्य प्राप्त हो जाए तो वह भी अच्छा है । क्योंकि कापालिक ने दूसरी कन्या की बात कही थी यह तभी संभव था जब पहली कन्या का जन्म होता ....

कापालिक मुरुंडनाथ ने दोनों पति पत्नी को अपने सामने बिठाकर कुछ विशेष तांत्रिक क्रियाएं संपन्न की और वहां से चला गया .....

दोनों पति-पत्नी इस बात को भूल गए !

उन्हें लगा कि यह भी अन्य बाबाओं की तरह केवल आश्वासन होगा .....

लेकिन.....

कापालिक मुरुंडनाथ के द्वारा की गई क्रियाएं अपना कार्य कर चुकी थी .....

दूसरे महीने शेफाली का मासिक धर्म नहीं आया .....

कभी-कभी ऐसा हो जाता था इसलिए उसने ध्यान नहीं दिया .....

लेकिन जब 15 दिन के बाद उल्टियां चालू हो गई तो उसे भी समझ में आ गया कि वह गर्भवती हो चुकी है .....

दोनों की खुशी का ठिकाना ना रहा !

समय आने पर उसने एक स्वस्थ और तंदुरुस्त लड़की को जन्म दिया । बच्ची का नाम रखा गया कृपा । जब वह 8 महीने की हुई तो शेफाली को फिर से गर्भ ठहर गया । दोनों अत्यंत प्रसन्न थे ....

आखिरकार प्रभु की कृपा हो ही गई और उनके जीवन में बहार आ गई ।

गर्भकाल पूर्ण हुआ और एक अत्यंत सुंदर कन्या ने जन्म लिया !

वह एक ऐसी कन्या थी जिसे अद्भुत कहा जा सकता था । बाल्यकाल से ही उसका मनमोहक रूप सभी को अपनी तरफ आकर्षित करता था । उसकी झील जैसी आंखें और मनमोहक मुस्कुराहट मां-बाप का ही नहीं बल्कि पूरे मोहल्ले का मन मोह लेते थे ! लाड़ से उसका नाम रखा गया पोरी (परी) ।

समय इसी प्रकार आगे चलता गया और शेफाली के घर में कुल 5 बच्चों का जन्म हो चुका था दो बेटियां और तीन बेटे .....

परी उस समय 7 साल की थी जब कापालिक मुरुंडनाथ का आगमन फिर से हुआ । दोनों खुश भी हुए और आशंकित भी .....

बटुक दास और शेफाली ने उसकी खूब आवभगत की । क्षमता के अनुसार बढ़िया स्वादिष्ट भोजन बना कर खिलाया ।

भोजन कर लेने के बाद कापालिक मुरुंडनाथ बोला - तुम्हारी इच्छा तो पूर्ण हो गई ! अपना वादा तो याद है ना।

यह सुनकर शेफाली का कलेजा मुंह को आ गया । उसने रोना गाना चालू कर दिया । बटुक दास भी नानूकूर करने लगा .....

अपनी नन्ही बच्ची को सौंपना इतना आसान नहीं होता .....

दोनों का यह व्यवहार देख कर कापालिक को क्रोध आ गया .....

वह क्रोध मे घर से बाहर निकल गया और जाते जाते बोला - तुम अपने वादे से मुकर रहे हो इसका परिणाम तुमको भुगतना होगा.....

इतना कहकर कापालिक गुस्से से पैर पटकता हुआ वहां से चला गया .....

उसी रात बटुक दास को खून की उल्टी होने लगी । उसे अस्पताल ले जाया गया लेकिन उसकी हालत खराब होती गयी..... दो दिन रखने के बाद अस्पताल वालों

ने भी जवाब दे दिया । कहा कि समय आ गया है ,
ज्यादा ज्यादा महिना भर और बाकी है .....
बटुक इतना कमजोर हो गया था कि वह सारा दिन
बिस्तर पर ही पड़ा रहता ।

इस घटना के दस दिन के बाद छोटे बेटे को सांप ने डस
लिया .....
उसका शरीर नीला पड़ने लगा .....
वह मरणासन्न अवस्था में पड़ा हुआ था .....
गांव के ओझा ने उसका उपचार करने के बाद उसके
बचने की संभावना से इनकार कर दिया था क्योंकि उसे
काफी जहरीले सांप ने काटा था ।
शेफाली की समझ में आ गया कि यह सब कापालिक
का प्रकोप है.....
लेकिन कापालिक का कोई अता पता नहीं था ।
अपने मरते हुए पति और पुत्र के पास वह रोती
बिलखती बैठी थी .....
लगभग अर्ध रात्रि का समय होने वाला था जब वह
कापालिक फिर से झोपड़ी के सामने प्रकट हुआ और
उसने आवाज लगाई.....

उसकी आवाज से शेफाली उसको पहचान गई और दौड़ती हुई झोपड़ी के बाहर निकली और उसके चरणों में गिर गई ।

बोली - बाबा मैं परी को तुमको दे दूंगी .....
मेरे पति और बच्चे को बचा लो ।
कापालिक ने अट्टहास किया और कहा - मुझे तेरी बात पर भरोसा नहीं है ..... ला पोरी को मुझे दे .....
शेफाली सोती हुई परी को उठा कर लाई और उसे कापालिक को सौंप दिया .....
कापालिक उसे लेकर पल भर मे अंधेरे में गुम हो गया।

शेफाली का रो रो कर बुरा हाल था .....
उसे यह डर भी सता रहा था कि कहीं बेटी को दे देने के बाद भी दोनों की हालत में सुधार नहीं हुआ तो उसका तो डबल नुकसान हो गया .....
रोते-रोते ना जाने कब उसकी नींद लग गई और वह चारपाई को पकड़ कर जमीन पर ही सो गई ।

सुबह बेटे ने उसे आवाज देकर बुलाया तो वह आश्चर्यचकित रह गई .....

जो बेटा मरणासन्न अवस्था में था वह आंगन में खेल रहा था !

और जो पति बिस्तर पर पड़ा हुआ था वह अपना लोटा साफ कर रहा था । यह देखकर शेफाली को समझ में आ गया कि कापालिक का क्रोध शांत हो गया है ! उसके दिल में बेटी का प्रेम उभर कर दर्द की अनुभूति दे रहा था ....

लेकिन....

दो जीवन बचाने के लिए उसने अपनी बेटी का परित्याग कर दिया था .....

उसे ऐसा लगने लगा था कि अब वह अपने जीवन में कभी भी अपनी बेटी को नहीं देख पाएगी ।

उधर कापालिक परी को लेकर अपने साधना स्थल पर पहुंचा तब तक परी को होश आ गया । वह घबरा रही थी .....

लेकिन कापालिक ने अपनी मोहिनी शक्ति का प्रयोग किया और वह उसके मानसिक नियंत्रण में आ गई । उस कन्या का कापालिक ने अभिषेक किया और उसे बीज मंत्र देकर उसे अपनी भैरवी बनाने की प्रक्रिया

प्रारंभ कर दी । कन्या अभी छोटी थी और उसे लेकर घूमना कापालिक के लिए भी दिक्कत की बात थी.....

उसके युवा होते तक उसे अभी प्रतीक्षा करनी थी । इस दौरान विभिन्न प्रकार की प्रक्रिया उस बच्ची के साथ संपन्न करनी थी जाप करवाना था .... जिससे वह शक्ति संपन्न होती जाती .....

दूसरे दिन दोपहर का समय रहा होगा जब कापालिक परी को लेकर वापस शेफाली के दरवाजे पर खड़ा था .....

शेफाली को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ , वह पत्थर बनकर खड़ी रह गयी .....

इतना अप्रत्याशित था परी का वापस आना ....

जब उसकी बेटी मां चिल्लाती हुई उसकी तरफ आने लगी तो उसने उसे अपने सीने से लगा लिया और फूट-फूट कर रोने लगी !

उधर बटुक ने भी कापालिक को देख लिया था और वह उसके चरणों में गिर कर रोने लगा !

कापालिक बिल्कुल शांत खड़ा था....

दोनों ने उसे घर के अंदर बुलाया आसन दिया और भोजन परोसा ।

भोजन कर लेने के बाद कापालिक ने कहा - परी तुम्हारे पास मेरी अमानत है । यह 16 साल तक तुम्हारे पास रहेगी उसके बाद मैं इसे लेकर जाऊंगा ।

दोनों ने सहमति में सिर हिला दिया ।

कापालिक बोला - यह ध्यान रखना कि यह तुम्हारे पास मेरी अमानत है ! इसको कुछ नहीं होना चाहिए । यह अक्षता ही रहनी चाहिए । इसके आसपास भी कोई लड़का नहीं फटकना चाहिए । इस बात का ध्यान रखना.....

इतना कह कर कापालिक चला गया !

समय आगे बढ़ता रहा .....

विशेष पर्व के अवसरों पर उसी प्रकार कापालिक प्रकट होता और परी को लेकर अपने गुप्त स्थान में कुछ विशेष तांत्रिक प्रक्रिया संपन्न करके सुबह होने से पहले घर में छोड़ देता .....

ऐसे ही समय आगे बढ़ता गया !

परी पंद्रह वर्ष की हो गई !

कापालिक लगभग एक साल से उधर नहीं आया था ! अन्यथा हर दो तीन माह मे उसका एक चक्कर लग जाता था ..... संभवत: वह अपने किसी साधना में लीन रहा होगा ।

परी के शरीर में यौवन प्रवेश कर चुका था । उसके नाक नक्श तो पहले से ही बेहद सुंदर थे । अब उसका शरीर भी मांसल और मादक हो चुका था !
ऐसा.....
जिसे देख कर युवक आहें भरते थे !
और वयस्क छुपी नजरों से उसे ताड़ते रहते थे ।

जैसे यौवन आता है विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण भी बढ़ने लगता है । परी भी इससे अछूती नहीं थी । बटुक और शेफाली उसके ऊपर कड़ी नजर रखते थे क्योंकि उन्हें मालूम था कि कापालिक का क्रोधित होना परिवार में किसी के लिए भी अच्छा नहीं है । वे उसे भी समझाते रहते कि तू कापालिक की भैरवी है । उसके अलावा किसी के प्रति तुझे ध्यान भी नहीं करना है.....

परी भी काफी संयमित रहती ....

लेकिन युवा मन की आकांक्षाएं अलग होती है । उस दिन मंदिर में उत्सव था और परी मंदिर गई हुई थी । वही जमींदार का बेटा प्लवन भी आया हुआ था । प्लवन लगभग 18 वर्ष का बांका जवान था । गोरा चिट्टा ! खूबसूरत !! और बढ़िया कद काठी का !! जिसे देखकर कोई भी युवती आकर्षित हो जाए । मजेदार बात यह थी कि उसे युवतियों में कोई दिलचस्पी नहीं थी..... गांव की बहुत सारी लड़कियां उसे डोरे डालने की कोशिश करती लेकिन वह किसी की तरफ आकर्षित नहीं होता .... वह शहर में पढ़ता था और कभी कबार गांव में आता था । उस दिन उत्सव के अवसर पर घर वालों ने उसे विशेष रूप से बुलाया था क्योंकि छुट्टियां चल रही थी । मंदिर में दोनों की आंखें से टकरा गई और पहली नजर में ही दोनों एक दूसरे की तरफ आकर्षित हो गए ..... दोनों लोगों की नजर बचाकर अंधेरे कोने की ओर बढ़ गए .....

और आगे बढ़ते बढ़ते नदी के किनारे तक पहुंच गये ।
युवावस्था और विपरीत लिंगी का साथ .....
यह मन को भटका देने के लिए पर्याप्त से ज्यादा होता है.....
और ऐसा ही हुआ !
नदी तट पर नाव बंधी हुई थी !
प्लबन परी को साथ में लेकर नाव से नदी पार करके इधर आ गया । पंप हाउस उस समय भी सुनसान था । नाव मे बहुत कुछ नहीं हो सकता था इसलिए उसने सोचा कि पंप हाउस सबसे सुरक्षित जगह होगी और वह उसे लेकर पंप हाऊस में आ गया ।
यौवन का उन्माद था और दो युवा शरीर मौजूद थे ।
आग दोनों तरफ लगी हुई थी.....
वस्त्र निकलते गए और फिर वह घटित हो गया जो ऐसे अवसरों पर होता है .....
परी का कौमार्य भंग हो चुका था !
यह एक ऐसा नशा है जो चढ़ता जाता है .....
पंप हाउस उनकी मिलन स्थली बन गया .... रात को चुपके से परी घर से निकलती .... प्लबन नदी किनारे नाव के साथ तयार रहता ....

किसी को खबर नहीं होती और सुबह होने से पहले परी घर लौट आती ....

एक महीने के बाद .....

अर्ध रात्री को कापालिक प्रकट हुआ .....

उसने बाहर से आवाज दी .....

शेफाली ने परी को देखा ....

वह वहाँ नहीं थी .....

उसने दरवाजा खोला .....

कापालिक ने उसे प्रश्नवाचक निगाहों से देखा ।

शेफाली ने सर झुका लिया .....

कापालिक सब कुछ समझ गया ।

आँखें बंद की और उसके सामने वह दृश्य आ गया जो उसके लिए सबसे असह्य था .....

उधर पंप हाउस मे दोनों एक दूसरे से लिपटे हुए पड़े थे तभी क्रोध से भभकता हुआ कापालिक वहां प्रकट हुआ .....

उसकी प्रतीक्षा.....

उसकी भैरवी .....

खंडित हो चुकी थी !

यह उसके लिए असहनीय बात थी ।

उसने वही दोनों को गला घोट कर मार दिया ..... इतने मे भी उसका क्रोध शांत नहीं हुआ और उसने दोनों को नाव की रस्सी से लटका दिया .....

उधर परी गायब हो चुकी थी और साथ ही प्लवन भी गायब था .....

उनकी तलाश चालू हो गई लेकिन किसी ने यह नहीं सोचा कि वह नदी के इस पार भी हो सकते हैं । पंप हाउस की तरफ कोई जाता नहीं था इसलिए शवों के वहां होने का पता तब चला जब चार-पांच दिन के बाद लाशों के सड़ने की वजह से भयानक दुर्गंध फैलने लगी .....

तब जाकर लाशें पंप हाउस में बरामद हुई ।

दोनों का सामाजिक परिवेश ऐसा था कि दोनों का विवाह संभव नहीं था.....

इसलिए यह मान लिया गया कि दोनों ने अत्महत्या की है .....

इतना बताकर वह आवाज खामोश हो गयी .....

मैं आश्चर्यचकित था ।

भूतकाल की एक घटना जिसके विषय में मैं जानना चाहता था .....

उसका एक-एक डिटेल मुझे पता चल चुका था ।

ऐसा लग रहा था जैसे मैं उसे अपनी आंखों से देख रहा हूं ।

सब कुछ.....

नाम समय और स्थान के साथ ।

मैं अत्यंत उत्साहित हो गया ।

मुझे समझ में आ गया कि यह कर्ण पिशाचिनी की लीला है और सिद्ध हो जाने के बाद मुझे इसी प्रकार से हर किसी की जानकारी प्राप्त हो जाएगी .....

यह मेरे लिए अपने सपनों को साकार कर लेने के जैसा था .....

मुझे लगा कि मैं सफल हो गया .....

मैं जो चाहता था वह मुझे मिल गया ।

और मैं गहरी नींद मे चला गया .....

दोपहर के लगभग 1:30 बजे होंगे जब मुझे कमरे में किसी की उपस्थिति का आभास हुआ ।

मैं थोड़ा सा जागृत हुआ .....

तब तक मेरे अंग पर किसी का हाथ पड़ चुका था !

वह अमावस्या की तिथि थी !

मैंने आंख खोलकर देखा तो पहले दिन वाली सांवले रंग की स्त्री वहां मौजूद थी ..... जो मुझे देख कर मुस्कुरा रही थी .....

मैं भी उसे देखकर मुस्कुराया .....

वह लगातार मेरे शरीर के साथ खेलती रही और मेरा शरीर जब उचित अवस्था में आ गया तो उसने अपनी इच्छा की पूर्ति की .....

उसके बाद वह लोप हो गई.....

रात हुई.....

अमावस्या की रात .....

साधना की आखिरी रात .....

वह रात जिसमे आर पार का फैसला होना था .....

या तो पिशाचिनी सिद्धि होती या फिर .....

मेरा मंत्र जाप आरंभ होते ही फिर से वह स्त्री प्रकट हो गई और मेरे सामने आकर बैठ गई । लगभग एक डेढ़ घंटे का मंत्र जाप हुआ होगा.....

तब....

वह उठी और ठीक उसी प्रकार मेरी गोद में आकर बैठ गई..... जैसे कल बैठी थी ।

उसने अपनी बाहें मेरे गले में डाल दी और कुछ देर के बाद गर्दन को दबाना चालू कर दिया .....

मेरी आंखें बाहर को आने लगी !

ऐसा लग रहा था.....

जैसे वह मुझे मार ही डालेगी !

लगभग दो चार मिनट तक वैसी ही स्थिति रही होगी ।

उसके बाद फिर उसने मुझे छोड़ दिया और खिलखिला कर हंस पड़ी ....

जैसे उसने कोई बहुत मजेदार काम किया हो !

लेकिन मेरी हालत खराब होने लगी थी ....

उसके बाद वह मेरे शरीर के हिस्सों को मसलती रही !

कभी बाल पकड़कर खींचती !!

कभी गाल में जोरदार थप्पड़ मारती !

कभी अंग को पकड़कर दबा देती ।

ऐसे ही क्रियाएँ चलती रही और मैं मंत्र जाप करता रहा .....

अर्धरात्रि के गुजर जाने के बाद वह पुनः मेरी गोद में आकर बैठ गई और उसी प्रकार से मल मूत्र त्याग करते

हुए वहीं बैठी रही । बीच-बीच में वह अपना नाखून कभी मेरे शरीर में तो कभी मेरे अंग में गड़ाती रहती .....

जब मेरा 54 माला का मंत्र जाप पूरा हो गया तो वह मेरे सामने आकर बैठ गई और बोली - तुमने मुझे सिद्ध कर लिया है .....

अब मैं तुम्हारी हूँ और तुम मेरे हो !

इतना कहकर उसने अपने गले में पड़ी हुई हड्डियों की माला मेरे गले में डाल दी और मेरे गले में पड़ी हड्डियों की माला अपने गले में डाल दी और कहा - इस प्रकार से हमारा पति पत्नी का संबंध हो गया है । अब जब भी मुझे भोग की आवश्यकता होगी तो मैं तुम्हारे पास आऊंगी और तुम्हें मुझे संतुष्ट करना होगा । जब भी तुम कुछ जानना चाहोगे मैं तुम्हारे कान में उसका जवाब दे दूंगी लेकिन मेरे विषय में अगर तुमने किसी को भी बताया या मुझ से छुटकारा पाने की कोशिश की तो यह निश्चित मान कर चलो कि मैं तुम्हें कुत्ते की मौत मारूंगी.....

इतना कहने के बाद उसने मुझे आगे बढ़कर चूम लिया और मेरे शरीर को सहलाने लगी .....

कुछ देर में ही शरीर स्वाभाविक रूप से उत्तेजित हो गया और फिर उसने पुनः मेरा भोग संपन्न किया । उससे भोग हो जाने के बाद ऐसा लगता था जैसे शरीर की पूरी ताकत समाप्त हो गई हो ।

पूरा शरीर निचुड़ गया हो .....

शरीर मे ताकत ही न बची हो ।

थकान की वजह से मैं उसी प्रकार वहीं पड़ा रहा .....

मेरी साधना पूर्ण हो चुकी थी !

पिशाचीनी सिद्ध हो चुकी थी !

इस बात की खुशी भरपूर थी ...

लेकिन.....

फिर भी मन में कहीं न कहीं अफसोस भी था कि यह मैंने क्या कर लिया ?

अमावस्या के अगले दिन शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा थी । उस दिन सुबह उठकर रगड़ रगड़ कर स्नान किया .... कई बार धोने के बाद भी ऐसा लगता रहा कि कुछ लगा हुआ है .....

मट्टी से रगड़ रगड़ कर मैंने अपने पूरे शरीर को धोया और करीब । घंटे तक पानी में पड़ा रहा .....

तब जाकर लगा कि कुछ सफाई हो गई है ।
उसके बाद मैंने दीपको तथा जप वाली हड्डी की माला को गड्ढा खोदकर गहरे में गाड़ दिया .....
मेरी दूसरी माला जो मेरे गले में पड़ी थी वह तो पिशाचिनी लेकर जा चुकी थी .....
अब उस की माला मेरे गले में थी !
उसे मैंने धारण किए हुए रखा !
उसे मुझे हमेशा धारण करना था , तभी पिशाचिनी से संपर्क बना रहता .....

कमरे को भी धोकर साफ किया और उसके बाद पुनः वस्त्र धारण कर लिए .....
अब मंत्र जाप करने की आवश्यकता नहीं थी क्योंकि वह पूर्ण हो चुका था ...
लेकिन अपने आप मंत्र का जाप मन मे चालू हो जाता था .....
शुक्ल पक्ष की एकादशी तक उसी प्रकार चलता रहा .....
वस्त्र मैंने परिवर्तित नहीं किए .....
स्नान भी नहीं किया .....

और ना ही दांत साफ किए ।

कुछ मात्रा में मल मूत्र रोज ग्रहण करता रहा लेकिन साथ में झूठे बर्तन में खाना भी .....

एकादशी को साधना पूर्ण हो गयी .....
एक अलग ही आत्मविश्वास की अनुभूति हो रही थी ।
एकादशी को मैंने नदी में कूद कूद कर स्नान किया ।
लगभग एक घंटे तक पानी के अंदर पड़ा रहा तब जाकर मुझे लगा कि मेरा शरीर साफ हो गया है .....

अब बारी थी मेरे सबसे प्रिय दोस्त डोम को अपनी सफलता की जानकारी देने की तो मैं मसान घाट की ओर चल निकला । उस समय चिता जल रही थी जिसके पास एक सेठ आँसू बहाता खड़ा था । मेरा हाथ सोता गले में पड़ी हड्डी की माला पर चला गया और मन में विचार आया कि यह क्या मामला है । तुरंत कान में आवाज आई - यह चंपक सेठ है । जिसकी पत्नी का घर के नौकर के साथ चक्कर चल रहा था । इसने उसे देख लिया और जहर देकर पत्नी को मार दिया अभी उसे लाकर जला रहा है ।

यह सुनकर मुझे बड़ा गुस्सा आया मैं सेठ के बगल में जाकर खड़ा हो गया और धीरे से उसके कान में बोला - तुझे शर्म नहीं आती अपनी बीवी को मारकर झूठे आंसू बहा रहा है ।

यह सुनते ही उसके चेहरे के भाव बदल गए । उसने याचना भरी निगाहों से मेरी तरफ देखा और मेरा हाथ पकड़ कर एक किनारे ले गया । अपनी जेब में हाथ डालकर उसने ₹200 मेरे हाथ में थमाए ....

वह हाथ जोड़कर बोला - महाराज ! किसी को मत बताना !

जिस आदमी के हाथ में ₹2 भी नहीं आते थे उसके हाथ में अचानक ₹200 आ जाए तो उसकी हालत आप समझ सकते हैं ..... और मेरे साथ भी वैसा ही था .....

मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूं ?

लेकिन हाथ में पैसे आने से मैं बड़ा खुश था ।

मैं चुपचाप आगे बढ़ गया ।

सेठ वापस मक्कारी वाले आंसुओं के साथ चिता के पास आकर खड़ा हो गया .....

मुझे जाता हुआ देखकर उसे काफी शांति अनुभव हुई होगी ।

मैं आगे बढ़ गया और दूसरे हिस्से में पहुंचा तो मेरा दोस्त डोम एक शव के संस्कार में व्यस्त था । मुझे देख कर उसने हाथ हिलाया और इंतजार करने का इशारा किया । मैं वही किनारे पर बने हुए एक चबूतरे पर बैठ गया । उसी चबूतरे पर एक और व्यक्ति बैठा हुआ था । उसके जबड़े तने हुए थे और वह किसी सोच में डूबा हुआ था । अचानक मेरी नजर उसके ऊपर पड़ी और मन में वही विचार है कि यह कौन है ?

तभी कान में पिशाचिनी की आवाज आने लगी - यह बंटी उस्ताद है । इसने तीन खून किए हैं और एक हफ्ते पहले जेल से छूट कर आया है ।

यह सुनते ही घबरा कर मैं चबूतरे से उठ कर खड़ा हो गया और मसान के दूसरे हिस्से की ओर बढ़ गया । लगभग आधे घंटे के बाद मेरा दोस्त फ्री हुआ । वह मेरे पास आया और मेरे चेहरे की खुशी देखकर बोला - लगता है तू सफल हो गया .....

मैं मुस्कुरा दिया .... क्योंकि बताना तो मना था । फिर हम लोगों ने उस दिन पार्टी की .....

अगले दिन से मैंने वापस मसान घाट के कोने पर अपने ज्योतिष की दुकान चालू कर ली । अब परिस्थितियां बदल चुकी थी मेरे कपड़ा बिछाने से पहले ही दो लोग मेरे पास आकर खड़े हो गए ।
मैं आश्चर्यचकित रह गया क्योंकि दिन भर में मुश्किल से एक आधा आदमी आता था वह भी कभी कभार और यहाँ अपना कपड़ा बिछने से पहले ही दो लोग आकर खड़े थे ।

पहले आदमी को मैंने दूर जाने के लिए कहा और थोड़ी देर के बाद आने के लिए कहा । दूसरे आदमी को जो कपड़ों से धनी लग रहा था ,,,, अपने सामने बैठने के लिए कहा और गंभीर मुद्रा में उसकी तरफ देखने लगा .....

इस प्रकार की मुद्रा जिससे लगे कि मैं बहुत बड़ा ज्ञानी हूँ !

थोड़ी देर तक उसी मुद्रा में बैठने के बाद मैंने आंखें बंद कर ली और मन ही मन पिशाचिनी से पूछा कि यह कौन है ?

मेरे कानों में आवाज आई - यह रामदास है इसकी बीवी घर छोड़कर चली गई है और यह उसी को लेकर परेशान है । इसकी बीवी को इसका रिश्तेदार माधव भगा कर ले गया है । अभी रेलवे स्टेशन के पास वाले बसंत लॉज में कमरा नंबर 104 में मौजूद है ।

मैंने झटके से आँखें खोली और पूछा - बोलो रामदास ! तुम्हारी क्या समस्या है ?

मेरे मुंह से अपना नाम सुनते ही रामदास हतप्रभ रह गया और उसने मेरे पांव छू लिए । उसकी आंखों से आंसू बहने लगे । उसे ऐसा लगने लगा कि मैं बहुत बड़ा सिद्ध पुरुष हूं ।

उसने अपनी जेब से ₹21 निकाले और मेरे सामने धर दिए और बोला - बाबा बहुत बड़ी मुसीबत में हूं । अब मैं कैसे बताऊं ।

मैंने फिर आंख बंद की, मुद्रा बनाई, और फिर फटाक से अपनी आंख खोल दी .... बोला - रामदास तेरी बीवी भाग गई है ..... इसीलिए तू चिंतित है .....
मैं तुझे बता सकता हूं कि तेरी बीवी कहां है ?
दिखा तेरी कुंडली ।
उसने कहा - कुंडली तो नहीं है महाराज ! हाथ देख कर बता दो ।

मुझे हाथ देखना नहीं आता था लेकिन कुछ देखे बिना बताने से संशय पैदा हो सकता था । इसलिए मैंने उसका दाहिना हाथ फैलाने कहा और गंभीर मुद्रा में बोला - तेरी बीवी तेरे रिश्तेदार के साथ भागी है ! कुछ खर्चा करेगा तो मैं तुझे यह बताऊंगा कि वह कहां पर है।
उसने तुरंत अपनी जेब में हाथ डाला और जितने पैसे थे सब निकाल कर रख दिए और बोला - बाबा इज्जत का सवाल है .... आप बता दो ।

उसकी आंखें देख कर मुझे लग रहा था कि वह अपनी पत्नी को मार ही डालेगा । ऐसी स्थिति में मेरे भी फंसने की संभावना थी .....

इसलिए मैंने उससे कहा - मैं तुझे उसका पता बताऊंगा .....

लेकिन.....

तुझे एक वादा करना होगा कि तू उसकी जान नहीं लेगा , क्योंकि अगर तू उसकी जान ले लेगा तो एक हफ्ते के अंदर तेरी भी मौत हो जाएगी ....

तेरी जान उसकी जान से जुड़ी हुई है ।

मैंने ऐसे ही हवाबाजी की .....

और वह मेरी बात मान गया.....

अपनी जान जाने की बात सुनकर ऐसे भी हर कोई बात मानने लगता है ।

मैंने उसके रखे हुए पैसों को अपने जेब के हवाले किया और पुनः ध्यान की मुद्रा में बैठ गया .....

बोला - रामदास ! रेलवे स्टेशन के किनारे एक लॉज दिख रहा है उसका नाम ब से चालू होता है बाकी ठीक से नहीं दिख रहा.....

रामदास बोला - बसंत लाज होगा ..... बसंत लाज ।

मैंने कहा - हाँ .... बसंत लाज और उसके अंदर कमरा नंबर 104 में तेरे रिश्तेदार माधव के साथ तेरी बीवी मौजूद है । दोनों कहीं निकालने की तैयारी मे हैं ।
मेरी बात पूरी होते ही वह उठकर वहां से सरपट भाग लिया .....
दूसरा थोड़ी देर में वापस आया .....
उसे भी बैठा कर सवाल पूछने से मना कर दिया और उसकी जन्मतिथि आदि पूछ कर कुंडली का निर्माण किया .....
और पिशाचीनी से सवाल पूछा - यह कौन है ?
कान में उत्तर आ गया - यह भोलानाथ है । इसका बेटा घूम गया है । उसी की तलाश में भटक रहा है ।

मैंने पूछा - इसका बेटा कहां है ?

जवाब आया - इसका बेटा एक दुर्घटना का शिकार हो गया है । टॉलीगंज के सरकारी अस्पताल में भर्ती है । उसकी एक टांग टूट गई है ।

मैंने फिर से विशेष प्रकार की मुद्राएं बनाई आसमान की तरफ देखकर थोड़ी देर बैठा रहा .....
ताकि उसे लगे कि मैं आसमान से कुछ प्राप्त कर रहा हूं.....
यह सब देख कर वह काफी प्रभावित हो रहा था .....
मैंने उसकी आंखों में आंखें डाली और बोला - तुम्हारा नाम भगवान शंकर के नाम जैसा है..... बोलो क्या मैं सही बोल रहा हूं ?

वह गदगद हो उठा .....
बोला - हां प्रभु ! मेरा नाम भोलानाथ है ।
मैंने आवाज लगाई - जय शिव शंकर ! जय शिव शंकर ।
फिर कुंडली को देखने लगा और बताया - संतान भाव तुम्हारा गड़बड़ दिख रहा है । इससे संभावना बनती है कि तुम्हारा पुत्र तुमसे अलग हो जाएगा .....

ज्योतिष के संबंध मे दशा अंतर्दशा की मुझे थोड़ी जानकारी थी इसलिए थोड़ी देर रुक कर मैंने ज़ोर से कहा - अरे ! यह तो वही समय .....राहु की अंतर्दशा चल रही है और पक्का तुम्हारा लड़का तुमसे दूर हो गया होगा ....

वह तुरंत मेरे पांव पकड़कर लोट गया और बोला - महाराज ! कैसे भी पता लगा दो । मेरा जवान लड़का घर से चला गया है । एक हफ्ते से उसका कोई पता नहीं चल रहा है । सब जगह ढूंढ चुका हूं लेकिन कोई खबर नहीं मिल रही.....
कुछ करो महाराज..... कुछ करो !
वह मेरे पांव में लेटा हुआ था .....
मैंने बड़ी मुश्किल से अपना पांव छुड़ाया और बोला - पता तो मैं तुझे बता दूंगा लेकिन मुझे इसके लिए कुछ करना पड़ेगा ..... इसमें खर्च आएगा ।

वह बोला - आप उसकी चिंता मत करो .....
आप मेरे बेटे का पता बता दो .....
अगर वह मिल गया तो .....
आप जो बोलोगे वह मैं आपको दूंगा ।

पहले तो मन में विचार आया कि अगर यह लड़के के मिलने के बाद वापस नहीं आया तो क्या होगा ?

फिर मन में विचार आया ऐसे भी तेरे को क्या जरूरत है ? पैसे तो पहले वाले से ही मिल चुके हैं आज का खर्चा पानी तो उसमें निकल ही जाएगा । इसका आ गया तो ठीक .....
और नहीं आया तो भी ठीक .....

तो.....
मैंने फिर से मुद्रा बनाई !
गंभीर हुआ !
ऐसे ही कुछ कुछ बुदबुदाया .....
होठों को हिलाया .....
जीभ बाहर निकाली.....
जमीन से मिट्टी उठाकर उसके हाथ में रखी और हवा में तीन चुटकी बजाई ।

वह मुझे यह सब करता हुआ आश्चर्य से देख रहा था जैसे कोई बहुत बड़ी चीज कर रहा हूं लेकिन असलियत केवल मुझे मालूम थी .....
यह सब तामझाम करने के बाद मैंने उसे बताया - तेरा लड़का टालीगंज के सरकारी अस्पताल में लेटा हुआ दिख रहा है ..... उसकी एक टांग टूट गई है ।
उसने 51 रुपये चढ़ाए और राकेट की तरह वहां से भाग निकला ।

शाम होते तक लगभग 10-12 लोग मेरे पास कुंडली दिखा चुके थे और उनमें से अधिकांश को मैंने संतुष्ट कर के भेज दिया था ।
जब मैंने अपनी जेब से पैसे निकाल कर गिनती चालू की तो साढे तीन सौ रुपये जमा हो चुके थे । सबसे पहले मुझे अपने दोस्त डोम का ख्याल आया । उसने मेरी बहुत मदद की थी..... पैसे से भी और भोजन से भी । मैं उसके झोपड़ी की तरफ बढ़ गया । एक बोतल बढ़िया शराब और कुछ खाने की चीजें भी साथ में लेकर गया था । वहां पहुंचने के बाद मैंने वे चीजें डोम के सामने रख दी और उसके हाथ में ₹100 पकड़ा दिए ।

वह मुस्कुराया बोला - पैसे तू अपने पास रख मुझे तो उसकी जरूरत ही नहीं पड़ती । तुझे अभी आगे और काम आएगा .....

मैंने उसे देने की बहुत कोशिश की लेकिन वह नहीं माना । अंततः ₹100 मुझे अपनी जेब में डालने पड़े । हम दोनों ने मिलकर शराब पी और खाना खाकर उसी झोपड़ी में दोनों सो गए ।

अगले दिन सुबह फिर वापस अपने आसन पर जाकर बैठ गया । कुछ देर के बाद भोलानाथ आता हुआ दिखाई दिया । मैं सोचने लगा कि इससे क्या मांगू ? वापस आ रहा है मतलब इसको उसका बेटा मिल गया होगा .... यह बात तो मेरी समझ में आ गई थी ।

उसके हाथ में एक थैली थी .....

उसने उस थाली में से एक फूल माला निकाली और मेरे गले में चढ़ा दी । मिठाई का डब्बा निकाला मेरे सामने रखा और मेरे चरण स्पर्श कर लिए । उसकी आंखों में आंसू थे ।

वह बोला - महाराज ! आपके बताए अनुसार मैं टालीगंज के सरकारी अस्पताल में गया था और मुझे अपना बेटा मिल गया ।

मैंने पूछा - अस्पताल वालों ने तुमको खबर क्यों नहीं दी ?

भोलानाथ बोला - लड़के का एक्सीडेंट हो गया था और सारा सामान किसी ने चुरा लिया था। सर पर लगी चोट के कारण उसे कुछ याद नहीं था। इसलिए वह अपने घर का पता भी नहीं बता पा रहा था। मैं उसे घर ले आया हूं। डॉक्टर का कहना है कि उसका खास ध्यान रखने की जरूरत है और तभी उसकी याददाश्त वापस आ सकती है।

मैं आपका हृदय से आभारी हूं। आप जो बोलोगे मैं आप को समर्पित करने को तैयार हूँ। मेरी तरफ से यह आपको दे रहा हूं.... इसके अलावा आप जो बोलेंगे वह मैं करने को तैयार हूं।

इतना कहकर उसने ₹50 के नोटों की गड्डी मेरे सामने रख दी। ज्योतिष कार्य में इतने रुपए एक साथ कभी नहीं मिले थे उन्हें देखकर मेरा मन तृप्त हो गया।

मैंने कहा - तुमने श्रद्धा से इतना दे दिया वही काफी है ....।

भोलानाथ बार बार धन्यवाद करता रहा और फिर पैर छूकर चला गया ।

मेरा ज्योतिष का कारोबार अब बढ़िया चलने लगा । रोज अच्छी खासी कमाई हो जाती थी । जिससे मैं काफी खुश था ।

--------समाप्त -------

प्रिय पाठक पाठिकाओं,

नमस्कार,

यहां पर इस प्रसंग को विराम दे रहा हूँ ।

इसके आगे की कथा “पिशाचिनी और ज्योतिषाचार्य” में पढिए .....।

सस्नेह

अनिल शेखर “अमस”